Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

अल्लाह तआला का आदेश

يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَ يَهْدِيَكُمْ سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَ يَتُوْبَ عَلَيْكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ

(सूरत आले-इम्रान आयत :130)

अनुवाद: अल्लाह चाहता है कि वह तुम पर बात ख़ूब स्पष्ट कर दे और उन लोगों के मार्ग की तरफ तुम्हारा मार्गदर्शन करे जो तुम से पहले थे और तुम पर तौब: स्वीकार करते हुए झुके और अल्लाह स्थायी ज्ञान रखने वाला और हिक्मत वाला है।

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 5

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 30

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

मूल्य 500 रुपए वार्षिक

1 ज़विल हज्जा 1441 हिजरी कमरी 23 वफा 1399 हिजरी शमसी 23 जुलाई 2020 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल;ल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

गुनाह से बचने की क़ुव्वत पैदा होती है अल्लाह तआला की पकड़ के ख़ौफ़ से लेकिन वह अल्लाह की पकड़ की खौफ क्योंकर हो सकता है जब कि यह मान लिया जाए कि हमारे गुनाह यसू ने उठा लिए।

इस नियम का प्रभाव वास्तव में बहुत बुरा पड़ा। अगर यह नियम न होता तो यूरोप के देशों में इस कसरत से पाप न होता और इस तरह पर बदकारी का सैलाब न आता

हम तो नियम ही को देखेंगे। हमारे नियम में तो यह लिखा है فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ (अज़्ज़लज़ाल:8) अब उस का असर तुम ख़ुद सोच लोगे, क्या पड़ेगा। यही कि इन्सान कर्मों की ज़रूरत को महसूस करेगा और नेक कर्म करने की कोशिश करेगा।

उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

कफ़्फ़ारा पर ईमान लाने से इन्सान गुनाह पर दिलेर हो जाता है

अगर कोई ये कहे कि कफ़्फ़ारा पर ईमान लाने से इन्सान गुनाह की ज़िन्दगी से नजात पा सकता है और गुनाह की शक्ति इस में नहीं रहती तो यह एक ऐसी बात है जिसका कोई सबूत नहीं है इस लिए कि यह नियम ही अपनी जड़ में गुनाह रखता है। गुनाह से बचने की क़ुव्वत पैदा होती है अल्लाह तआला की पकड़ के ख़ौफ़ से लेकिन वह अल्लाह की पकड़ की खौफ क्योंकर हो सकता है जब कि यह मान लिया जाए कि हमारे गुनाह यसू ने उठा लिए। इस से हम यह नतीजा निकालते हैं कि ऐसे नियमों का इन्सान कभी मुत्तक़ी नहीं हो सकता क्योंकि वह हर एक काम को जिसकी बुनियाद तक़्वा के नियमों पर हो ज़रूरी न समझेगा। यह ख़ूब याद रखो कि दिल की पाक़ीज़गी हमेशा नियमों ही से शुरू होती है वर्ना

ख़ुबसे नफ़स न गर्दो बसालहा मालूम

फिर हम यह देखते हैं कि कफ़्फ़ारा का मसला मानने वालों ने पाक बातिनी की व्यावहारिक उदाहरण क्या स्थापित किए हैं? यूरोप के बुरे कर्म सबको मालूम हैं। शराब जो सब जुर्मों और सब ख़बासतों की मां है। इस की यूरोप में इस क़दर प्रचुरता है कि इस की नज़ीर किसी दूसरे देश में नहीं मिलती। मैं ने किसी अख़बार में पढ़ा था कि अगर लन्दन की शराब की दूकानों को एक लाईन में रखा जाए तो पछत्तर मील तक चली जाएं। जिस हालत में इन को यह शिक्षा दी गई है कि हर एक गुनाह की माफ़ी का सर्टीफ़िकेट दिया गया है और जिस क़दर गुनाह कोई करे वह माफ़ हैं। अब सोच कर ईसाई हम को जवाब दें कि इस का प्रभाव क्या पड़ेगा।

अगर नऊज़ुबिल्लाह हमारा यह नियम होता तो हम पर इस का कितना बुरा असर पड़ता। नफ़्स अम्मारा तो सहारा ही तलाश करता है जैसे शीयों ने इमाम हुसैन रज़ी अल्लाह अन्हो का सहारा ले लिया और तक़िया की आड़ में जो कुछ कह लें सो थोड़ा है। मैं इसी तक़िया और इमाम हुसैन रज़ि के फ़िद्या के नियम की बिना पर दिलेरी से कहता हूँ कि शीयों में मुत्तक़ी कम निकलेंगे। ख़लीफ़ा मुहम्मद हसन साहिब ने लिखा है कि فَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ عَظِيْمٍ (अस्साफ़ात:108) से जो क़ुरआन में आया है इमाम हुसैन रज़ि का शहीद होना निकलता है और इस नुक्ता पर बहुत ख़ुश हुए हैं कि मानो क़ुरआन शरीफ़ के मग़ज़ को पहुंच गए हैं।

इन की इस नुक्ता दानी पर मुझे एक सुस्त की हिकायत याद आई। वह यह है कि एक पोस्ती के पास एक लौटा था और इस में सुराख़ था। जब शौच को जाता। इस से पहले कि वह फ़ारिग़ हो कर सफाई करे सारा पानी लोटे से निकल जाता था।आख़िर कई दिन की सोच और फ़िक्र के बाद इस ने यह स्कीम निकाली कि पहले सफाई ही कर लिया करें और अपनी इस तजवीज़ पर बहुत ही ख़ुश हुआ। इसी किस्म का नुक्ता और नुस्ख़ा उनको मिला है। जो فَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ عَظِيْمٍ (अलस्सफ़ात:108) से इमाम हुसैन रज़ि की शहादत निकालते हैं। शीया लोगों की मस्जिदें तक तो साफ़ नहीं रह सकती हैं। हम एक शीया उस्ताद से पढ़ा करते थे और वहां कुत्ते पेशाब तथा पाख़ाना कर जाते थे और मुझे याद नहीं है कि किसी ने कभी वहां नमाज़ पढ़ी हो। शीया यही कहते हैं कि हमारे लिए इमाम हुसैन रज़ि और अहले बैत शहीद हो चुके हैं। इन के ग़म में रो लेना और मातम कर लेना बस यही काफ़ी है। जन्नत के लिए और किसी कर्म की सिवाए उस के ज़रूरत नहीं और ऐसा ही ईसाई कहते हैं कि मसीह का ख़ून हमारे लिए नजात देने वाला हुआ।अब हम पूछते हैं कि अगर तुम्हारे गुनाहों पर भी बाज़पुरस होनी है और तुम्हें भी उनकी सज़ा भुगतनी है तो फिर ये नजात कैसी है?

इस नियम का प्रभाव वास्तव में बहुत बुरा पड़ा। अगर यह नियम न होता तो यूरोप के देशों में इस कसरत से पाप न होता और इस तरह पर बदकारी का सैलाब न आता जैसे अब आया हुआ है। लंडन और पैरस के होटलों और पार्कों में जा कर देखो क्या हो रहा है और उन लोगों से पूछो जो वहां से आते हैं। आए दिन अख़बारों में इन बच्चों की सूचियां जिनका जन्म नाजायज़ जन्म होता है, प्रकाशित होती हैं।

कफ़्फ़ारा क़ुदरत के कानून के ख़िलाफ़ है

हम तो नियम ही को देखेंगे। हमारे नियम में तो यह लिखा है فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا يَّرَهٗ (अज़्ज़लज़ाल:8) अब उस का असर तुम ख़ुद सोच लोगे, क्या पड़ेगा। यही कि इन्सान कर्मों की ज़रूरत को महसूस करेगा और नेक कर्म करने की कोशिश करेगा। इस के विपरीत उस के जब यह कहा जाएगा कि इन्सान कर्मों से नजात नहीं पा सकता। तो यह नियम इन्सान की हिम्मत और कोशिश को गिरा देगा और इस को बिलकुल मायूस कर के असहाय बना देगा। इस से यह भी पता चलता है कि कफ़्फ़ारा का नियम इन्सानी शक्तियों का भी अपमान करता है क्योंकि अल्लाह तआला ने इन्सान की शक्तियों में एक तरक़्क़ी का माद्दा रखा है लेकिन कफ़्फ़ारा उस को तरक़्क़ी से रोकता है अभी मैं ने कहा है कि कफ़्फ़ारा पर विश्वास रखने वालों के हालात आज़ादी और बे क़ैदी को जो देखते हैं तो यह उसी नियम की वजह से है कि कुत्ते और कुत्तियों की तरह ज़ना होते हैं। लन्दन के हाईड पार्क में एलान के साथ हराम होता है और हरामी बच्चे पैदा होते हैं। अत: हमको सिर्फ़ ज़बानी बात तक ही सीमित न रखना चाहिए। बल्कि कर्म साथ होने चाहिएं। जो कर्मों की ज़रूरत नहीं समझता वह सख़्त आख़रत की परवाह न करने वाला और नादान है। कानून क़ुदरत में कर्मों

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अल्ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का यूरोप का सफर, सितम्बर अक्तूबर 2019 ई (भाग-12)

मस्जिद का उद्देश्य एक ख़ुदा की इबादत है, चाहे कोई किसी भी धर्म से सम्बन्ध रखता हो

आँहज़रत सल्ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नजरान के ईसाईयों को मस्जिद नबवी में इबादत करने का स्थान दिया था,हमारी मस्जिदें प्रत्येक के लिए खुली हैं जब इच्छा हो आए।

हम इस्लाम धर्म पर यक़ीन रखने वाले हैं जो आँहज़रत सल्ल्लाहो अलैहि वसल्लम लेकर आए थे और इस धर्म का सार यह है कि समस्त ताक़तों का मालिक एक ख़ुदा है, आं हज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को आख़िरी शरई नबी समझना, आप के बाद कोई नई शरीयत नहीं आसकती और क़ुरआन करीम को आख़िरी शरई किताब समझना और जो इस में हुक्म दिए गए हैं, इन समस्त पर अनुकरण करना।

एक प्रैस कान्फ्रैंस में फ्रांस के मशहूर अख़बार DNA को हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह का इंटरव्यू।

इस्लाम हरगिज़ अग्रवाद का धर्म नहीं और इस्लाम हर धर्म के मानने वाले को इस का हक़ देता है। इस्लाम में पड़ोसी के अधिकार हैं

लेकिन इस्लाम की जो शिक्षा देता है वह यह कहती है कि अपने पड़ोसी का इस हद तक विचार रखो कि जिस तरह तुम अपने किसी क़रीबी अज़ीज़ का रखते हो।

अगर आप में से किसी के ज़ेहन में कोई फ़िक्र है कि शायद अहमदी मुसलमान यहां आकर, इस मस्जिद को बना कर किसी किस्म के फ़ित्ने का कारण न बनें तो याद रखें कि इन्शा अल्लाह तआला हम फ़ित्ने का कारण नहीं बनेंगे बल्कि आप लोगों की सेवा करने वाले और इस देश के क़ानून की पाबंदी करने वाले होंगे और इन्शा अल्लाह वही वास्तविक इस्लामी शिक्षा यहां फैलाने वाले होंगे, अपने अनुकरण से दिखाने वाले होंगे जो हमें हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सिखाई और जो क़ुरआन करीम ने सिखाई।

मस्जिद महदी (सस्ट्रासबर्ग)के उद्घाटन के अवसर पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ का ईमान वर्धक ख़िताब तथा मेहमानों के विचार

(रिपोर्ट अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)

(अनुवादक शेख मुजाहिद अहमद शास्त्री)

फ़ैमिली मुलाक़ातें

इस के बाद प्रोग्राम के अनुसार 6 बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फैमेलीज़ मुलाक़ातों का प्रोग्राम शुरू हुआ। आज शाम के इस सैशन में 28 फ़ैमिलीज़ के 97 लोगों और इसके अतिरिक्त 10 लोगों ने व्यक्तगित तौर पर अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। मुलाक़ात करने वाली यह फ़ैमिलीज़ और लोगों स्टरास बर्ग की जमाअत के अतिरिक्त पैरिस,Epernay, Yvelines, Lyon Saint Denis और Lille से आए थे। इस के अतिरिक्त जर्मनी से आने वाली एक औरत ने भी मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। कई फ़ैमिलीज़ मुलाक़ात को लिए बड़े लंबे और दूर से सफ़र तय कर के आई थीं। Epernay से आने वाली 355 किलोमीटर, पैरिस से आने वाले 490 किलोमीटर जबकि Lyon से आने वाले 495 किलोमीटर और Lille से आने वाले लोगों और फ़ैमिलीज़ 525 किलोमीटर की दूरी तय कर के पहुंची थीं।

इन सभी ने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीर बनवाने का सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने दया करते हुए शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों और छात्राओं को क़लम प्रदान फरमाए और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फरमाए। मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम 8 बजकर 20 मिनट तक जारी रहा। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद मुबारक तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

12 अक्तूबर 2019 ई(दिनांक हफ़्ता)

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने सुबह 6 बजकर 30 मिनट पर मस्जिद महदी तशरीफ़ ला कर नमाज़ फ़ज्र पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए। सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ दफ़्तरी उमूर की पूरा करने में व्यस्त रहे। 1 बजकर 45 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और आदरणीय मुबारक अहमद ज़फ़र साहिब ऐडीशनल वकीलुल माल लंदन ने हुज़ूर अनवर से दफ़्तरी मुलाक़ात का सौभाग्य पाया।

इस के बाद 2 बजकर 5 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ ने मस्जिद महदी तशरीफ़ ला कर नमाज़ ज़ुहर तथा अस्र जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपने रिहायशी हिस्सा में तशरीफ़ ले गए।

मस्जिद महदी का उद्घाटन आयोजन

आज प्रोग्राम के अनुसार "मस्जिद महदी' के उद्घाटन के हवाला से एक आयोजन का आयोजन मस्जिद महदी से जुड़े हुए हाल में किया गया था। इस आयोजन में सामूहिक तौर पर 191 मेहमान शामिल हुए। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से आशा से बहुत अधिक मेहमान आए। इन मेहमानों में

मैंबर नैशनल पार्लीमैंटMs.Martine Wonner Hurtigheim
Mr. Jean- Jacques Ruch डिप्टी मेयर आफ़Hurtigheim
Mr. Rene Urban डिप्टी आ फ़ुHurtigheim
Mr. Claude Grimm मेयर आफ़Quatzenheim
Mr. Christian Libert मेयर आफ़ Kienheim
Mr. Luc Ginzc चेयरमैन डिस्ट्रिक्ट कोंसलि
Mr. Justin Vogel वाइस प्रैज़ीडैंट आफ़ काओनटी
Mr. Etienne Burger
शामिल थे। इसके अतिरिक्त विभिन्न धर्मों के प्रतिनिधि भी जिन में
Mr. Christian Albecker प्रैज़ीडैंट आफ़ एसोसीएशन क्रिस्चन प्रोटेस्टंटस Alsace Moselle
Mme la Pasteur Claire de Lattre - Duchet
महोदया Hurtigheim चर्च की औरत मिनिस्टर हैं
मैंबर आफ़ इंस्टी टीवशं Tibetian Buddhists
Mr. Dominique Lejonne
Mr. Michael O'Boyle
(Bhakti Mandir - Hindu)
Mr. Ernest Winstein (प्रैज़ीडैंट यूनीयन आफ़ लिबरल परोटीसटनट)

शामिल थे। इस के अतिरिक्त विभिन्न एसोसीएशन के सदरान , वुकला, आर्कीटेक्ट, प्रोफ़ैसर्ज़, डाक्टरज़, टीचरज़, बिज़नस मैन और ज़िन्दगी के विभिन्न विभागों से सम्बन्ध रखने वाले लोग शामिल थे।

हुज़ूर अनवर को आफ़ आनर्न

प्रोग्राम के अनुसार इस आयोजन में शामिल होने के लिए 3 बजकर 10 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह से बाहर तशरीफ़ लाए। हाल से बाहर दूसरे विश्वयुद्ध में शामिल होने वाले फ़ौजी

शेष पृष्ठ 8 पर

ख़ुत्बः जुमअः

आरम्भिक सहाबा की क़ुर्बानियां बहुत ज़्यादा थीं उनका मुक़ाबला ही नहीं किया जा सकता।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि के बारे में फ़रमाया कि वह मुस्लमानों के सरदारों के सरदार हैं और यह भी फ़रमाया कि अब्दुर्रहमान आसमान में भी अमीन है और ज़मीन में भी अमीन है

जंग उहद के दिन जब लोगों के पांव उखड़ गए तो हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ दृढ़ संकल्प रहे।

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि को यह सआदत भी मिली कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके पीछे नमाज़ पढ़ी। फ़रमाया कि नबी का तुम्हारे पीछे नमाज़ पढ़ना इस बात की भी तसदीक़ है कि तुम नेक आदमी हो।

अशरा मुबशरा में शामिल आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के महान बदरी सहाबी हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ी अल्लाह अन्हो के प्रशंसनीय गुणों का वर्णन।

जो अशरा मबशरा में से थे जिन को जन्नत की बिशारतें भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दी थी लेकिन फिर भी उन लोगों में ख़ुदा तआला का ख़ौफ़ और ख़शीयत इतनी थी कि हर समय फ़िक्र में रहते थे

मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि

जब तुम किसी जगह के बारे में सुनो कि वहां कोई महामारी फूट पड़ी है तो वहां मत जाओ और अगर कोई बीमारी किसी ऐसी जगह पर फूट पड़े जहां तुम रहते हो तो वहां से फ़रार होते हुए बाहर मत निकलो।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 19 जून 2020 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक़ इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُولُهُ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَا الضَّآلِّيْنَ

गुज़शता ख़ुत्बा में हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि का वर्णन हो रहा था और इस का कुछ हिस्सा रह गया था जो आज मैं वर्णन करूँगा। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि के उमय्या बिन ख़लफ के साथ पुराने दोस्ताना सम्बन्ध थे। इस के बारे में एक विस्तार से घटना सही बुख़ारी में वर्णन हुआ है जिसमें हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि वर्णन करते हैं कि मैं ने उमय्या बिन ख़लफ़ को ख़त लिखा कि वह मक्का में मेरे माल और जायदाद की हिफ़ाज़त करे और मैं इस के माल तथा सामान की मदीना में हिफ़ाज़त करूँगा। जब मैं ने अपना नाम अब्दुर्रहमान लिखा तो उम्मय: ने कहा कि मैं अब्दुर्रहमान को नहीं जानता। तुम मुझे अपना वह नाम बताओ, वह नाम लिखो जो जाहलियत में था। कहते हैं कि इस पर मैं ने अपना नाम अब्द अमरो लिखा। जब वह बदर की जंग में था तो मैं एक पहाड़ी की तरफ़ निकल गया जबकि लोग सो चुके थे ताकि मैं इस की हिफ़ाज़त करूँ तो बिलाल रज़ि ने उसे कहीं देख लिया। अत: हज़रत बिलाल रज़ि गए और अन्सार की एक मज्लिस में खड़े हो गए और कहने लगे कि यह उम्मय बिन ख़लफ़ है। अगर यह बच निकला तो मेरी ख़ैर नहीं। इस पर हज़रत बिलाल रज़ि के कुछ लोग हमारे अर्थात हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि और उम्मय बिन ख़लफ के पीछा में निकले क्योंकि यह उस को बचाने के लिए निकले थे, पनाह में लेने के लिए निकले थे। कहते हैं कि मैं डरा कि वे हमें पा लेंगे। हमें पकड़ लेंगे इसलिए मैंने इस के बेटे को इस के लिए पीछे छोड़ दिया कि वह उस के साथ लड़ाई में व्यस्त हो जाएं अर्थात बेटे के साथ वे मुस्लमान लोग जो पीछे आ रहे थे लड़ाई में व्यस्त हो जाएं और हम ज़रा आगे निकल जाएं। मैं उनको सुरक्षित जगह पर ले जाऊं। अत: उन्होंने इस को मार डाला। इस के बेटे को उन लोगों ने मार डाला। फिर कहते हैं कि उन्होंने मेरा दाव कारगर न होने दिया और हमारा पीछा किया। उमय्या चूँकि भारी भरकम आदमी था इसलिए शीघ्र इधर उधर न हो सका। आख़िर जब उन्होंने हमें पा लिया तो मैंने उसे कहा बैठ जाओ तो वह बैठ गया। मैंने अपने आपको इस पर डाल दिया कि उसे बचाऊं तो उन्होंने मेरे नीचे से इस के बदन में तलवारें घोंपें यहां तक कि उसे मार डाला। उनमें से एक की तलवार से मेरे पांव पर भी ज़ख़्म आ गया।

(सही अलबख़ारी किताबुल वकाल बाब इज़ा वकलल मुस्लिम हरबया फ़ी दारुल हर्ब हदीस 2301)

तारीख़ तिबरी में इस का विस्तार यूं वर्णन है कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि वर्णन करते हैं कि मक्का में उम्मय: बिन ख़लफ़ मेरा दोस्त था। इस वक़्त मेरा नाम अब्द अमरो था। मक्का ही में जब मैं इस्लाम लाया तो मेरा नाम अब्दुर्रहमान रखा गया। इस के बाद वहीं जब कभी वह मुझ से मिलता तो कहता हे अब्द अमरो !क्या तुम अपने बाप के रखे हुए नाम से मुंह मोड़ते हो? मैं कहता हाँ। इस पर वह कहता मगर मैं रहमान को नहीं जानता। मुनासिब यह है कि कोई और नाम चुन लो इस से मैं तुम्हें सम्बोधित करूँगा क्योंकि अपने पहले नाम पर तुम मुझे जवाब नहीं देते और जिस बात से मैं नावाक़िफ़ हूँ उस के नाम के साथ में तुम्हें नहीं पुकारूँगा। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि कहते हैं कि जब वह मुझे 'हे अब्द अमरो! कह कर पुकारता तो मैं उसे जवाब नहीं देता था। मैं ने कहा कि हे अबू अली इस के बारे में तुम जो चाहो निर्धारित कर दो। यह जो है यह पुराना नाम है तो मैं इस का जवाब नहीं दूँगा। उसने कहा अच्छा तुम्हारा नाम अब्दे इलाह बेहतर होगा। मैं ने कहा अच्छा। अत: उस के बाद जब में और वह मिलते तो वो मुझे अब्द इलाह के नाम से पुकारता। मैं उसे जवाब देता और इस से बातें करता यहां तक कि बदर का दिन आ गया। मैं उम्मय: के पास से गुज़रा। वह अपने बेटे अली बिन उम्मय: का हाथ थामे खड़ा था। मेरे पास कई ज़िरहें थीं जिन्हें मैंने हासिल किया था। मैं उनको लिए जा रहा था। उसने मुझे देखकर आवाज़ दी कि हे अब्द अमरो मैं ने कोई जवाब नहीं दिया। तब उसने कहा हे अब्द इलाह मैं ने कहा हाँ क्या कहते हो। उसने कहा क्या मैं तुम्हारे लिए इन ज़िराओं से जिनको तुम लिए जा रहे हो ज़्यादा बेहतर नहीं हूँ? मैं ने कहा अगर ऐसा ही है तो आ जाओ। मैं ने ज़िरहें वहां फेंक दीं अर्थात उसे पनाह देने के लिए और इस का और इस के बेटे अली का हाथ पकड़ लिया तो वह कहने लगा आज के जैसा दिन मेरे देखने में नहीं आया। जैसा कि आज दिन गुज़रा है मैं ने कभी नहीं देखा। बहरहाल वह कहते हैं कि मैं इन दोनों को साथ लेकर चल दिया। मैं बाप बेटे के बीच में उनका हाथ पकड़े हुए चला जा रहा था। उम्मय: ने मुझ से पूछा कि हे अब्द इलाह तुम में वह कौन है जिसके सीने पर शुतुरमुर्ग का पर बतौर निशान लगा हुआ था। मैं ने कहा वह हमज़ा बिन अब्दुल मुतलिब रज़ि है। उसने कहा हमारी यह हालत उसी की बदौलत है। यह जो हमारा बुरा हाल हुआ है इस की बदौलत है। बहरहाल कहते हैं मैं उनको लिए चला जा रहा था कि बिलाल रज़ि ने उसे मेरे साथ देख लिया। यह उम्मय: मक्का में हज़रत बिलाल रज़ि को तकलीफें देता था ताकि कि वह इस्लाम तर्क कर दें। वह उनको मक्का की साफ़ चट्टान पर जब वह धूप से ख़ूब तप जाती ले जाता और इस पर उनको पीठ के बल लिटा देता। फिर एक बड़े पत्थर के बारे में हुक्म देता जिस पर वह पत्थर उन के सीने पर रख दिया जाता और फिर कहता कि जब तक तू मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम) के धर्म को तर्क नहीं करेगा तुझे सज़ा मिलती रहेगी मगर बावजूद इस अज़ाब के बिलाल यही कहते 'उहद, उहद'। अर्थात वह एक है, वह एक है। इसलिए अब जब

उस की नज़र इस पर पड़ी अर्थात हज़रत बिलाल रज़ि की उम्मय: पर जब नज़र पड़ी तो कहने लगे कि उम्मय: बिन खिलफ कुफ्र का सरग़ना है। मैं नजात न पांऊं अगर यह बच जाए। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ने कहा हे बिलाल ! यह दोनों मेरे क़ैदी हैं। बिलाल रज़ि ने फिर कहा मैं नजात ना पांव अगर यह बच जाए। हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि ने हज़रत बिलाल रज़ि से कहा हे इब्न सौदा तुम सुनते हो। बिलाल ने फिर कहा मैं नजात न पाऊं अगर यह बच जाए। फिर हज़रत बिलाल रज़ि ने निहायत ज़ोर से चला कर कहा हे अल्लाह के अंसार यह कुफ़्फ़ार का सरग़ना उम्मय: बिन ख़लफ़ है। मैं हलाक हो जाऊं अगर यह बच जाए। उनकी इस आवाज़ पर लोगों ने हमें हर तरफ़ से घेर लिया और क़ैद सा कर लिया। मैं उसे बचाने लगा। एक शख़्स ने इस के बेटे पर तलवार मारी और वह गिर पड़ा। इस वक़्त उम्मय: ने इस ज़ोर से चीख़ मारी कि मैंने इस जैसी कभी नहीं सुनी। मैंने कहा भाग जाओ मगर भाग नहीं सकते। अल्लाह की क़सम मैं तेरे किसी काम नहीं आ सकता। इतने में हमला करने वालों ने इन दोनों पर अपनी तलवारों से हमला किया यहां तक कि इन दोनों का काम तमाम कर दिया। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि कहा करते थे कि अल्लाह तआला बिलाल रज़ि पर रहम करे। मेरी ज़िरहें भी गईं और क़ैदी को उन्होंने ज़बरदस्ती मुझ से छीन लिया।

(तारीख़ अत्तिबरी भाग 2 पृष्ठ 35 बाब ज़िक्र वाकअत बदर अलकुबरा प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1987 ई)

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि जंग उहद में भी शामिल हुए। जंग उहद के दिन जब लोगों के पांव उखड़ गए तो हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ साबित-क़दम रहे।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 95 अब्दुर्रहमान बिन औफ़ दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1990 ई)

जंग उहद के दिन हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि को इक्कीस ज़ख़्म आए और पांव में ऐसा ज़ख़्म आया कि आप लंगड़ा कर चलते थे और सामने के दो दाँत भी शहीद हुए।

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ476 अब्दुर्रहमान बिन औफ दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत)

हज़रत इब्ने उमर वर्णन करते हैं कि शाबान छ: हिज्री में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि के नेतृत्व में सात सौ आदमियों को दूमतुल जन्दल की तरफ़ भेजा। अपने मुबारक हाथ से हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने काले रंग की पगड़ी उनके सिर पर बाँधी जिसका शिमला उनके कंधों के बीच रखा। फिर आप ने फ़रमाया अबू मुहम्मद मुझे दूअतुल जन्दल की तरफ़ से चिन्ताजन्क ख़बरें आ रही हैं। वहां मदीना पर हमला करने के लिए लश्कर जमा हो रहा है। तुम अल्लाह की राह में जिहाद के लिए इधर रवाना हो जाओ। सात सौ मुजाहिद तुम्हारे साथ जाऐंगे। दूअतुल जन्दल पहुंच कर वहां के सरदार और इस के क़बीला कलब को पहले इस्लाम की दावत देना लेकिन अगर लड़ाई की नौबत आए तो देखना किसी को धोखा न देना। ख़यानत और वादा न तोड़ना। बच्चों और औरतों को क़त्ल न करना और ख़ुदा के बाग़ियों से दुनिया को पाक कर देना। इन सावधानियों के साथ फिर जंग की इजाज़त है। अत: हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ने दूअतुल जंदल पहुंच कर उनको तीन दिन तक इस्लाम की दावत दी। वे तीन दिन तक इन्कार करते रहे। फिर असबग़ बिन अम्रो कल्बी जो ईसाई था और उनका सरदार था उसने इस्लाम क़बूल किया। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सारा हाल लिखा। आप ने फ़रमाया कि इस सरदार की बेटी तुमाज़िर से शादी कर लो। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ने इस से शादी की और इस के साथ मदीना वापस आए। तुमाज़िर बाद में उम्मे सलमा कहलाईं।

(रोशन सितारे ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब भाग 2 पृष्ठ 106)

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 96 अब्दुर्रहमान बिन औफ़ दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत)

(अशरा मुबशरा बशीर साजिद पृष्ठ 875 अलबदर पब्लेकेशनज़ लाहौर)

उम्र बिन अब्दु अलीज़ वर्णन करते हैं कि चौदह हिज्री में जंग जिस के अवसर पर हज़रत उमर रज़ि को जब हज़रत अबू उबैदह बिन मसूद रज़ि की शहादत की सूचना मिली। यह जो जंग जसर है पहले भी यह वर्णन हो चुकी है। फ़ारसियों के एक हाथी ने उनको कुचल दिया था। बहरहाल जब सूचना मिली और मालूम हुआ कि फ़ारस वालों ने ऑले किसरा में से एक शख़्स को तलाश कर के अपना बादशाह बनाया है तो आपने मुहाजिरीन और अन्सार को जिहाद के लिए आवाज़ दी और मदीना से रवाना हो कर सिरार स्थान पर निवास किया। सिरार मदीना के एक पहाड़ का नाम है। यह मदीना से तीन मील के दूरी पर इराक़ के रास्ते पर स्थित जगह है। बहरहाल वहां आपने निवास किया और हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह को आगे रवाना किया ताकि वह अअवस पहुंच जाएं। आपने मैमन: अर्थात फ़ौज का जो दायाँ बाज़ू था इस पर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि को और मैयसरह जो फ़ौज का बायां बाज़ू था इस पर ज़ुबैर बिन अवाम रज़ि को निर्धारित फ़रमाया और हज़रत अली रज़ि को मदीना में अपना क़ायमक़ाम निर्धारित कर आए थे। हज़रत उमर रज़ि ने लोगों से मश्वरा किया। सब ने आपको फ़ारस जाने का मश्वरा दिया। यह क़ाफ़ला जब रवाना हुआ था तो सिरार आने तक हज़रत उमर रज़ि ने किसी से मश्वरा नहीं किया था। यहां पहुंच कर आपने मश्वरा किया। हज़रत तलहा रज़ि वापस आए तो वह भी उन लोगों के साथ थे। पहले हज़रत तलहा रज़ि वहां नहीं थे। जब वापस आए तो उन्होंने कहा ठीक है आगे जाना चाहिए। मगर हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि उन लोगों में से थे जिन्हों ने आप को जाने से रोका और रोकने की वजह वर्णन करते हुए हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ने कहा कि आज से पहले मैंने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिवा किसी पर अपने माँ बाप को क़ुर्बान नहीं किया और न उस के बाद कभी ऐसा करूँगा मगर आज कहता हूँ कि हे वह कि जिस पर मेरे माँ बाप फ़िदा हों इस मामला का आख़िरी फ़ैसला आप मुझ पर छोड़ दें। हज़रत उमर रज़ि जो उस वक़्त ख़लीफ़ा थे आपने उनको यह जवाब दिया। आप वहां अर्थात सिरार के स्थान पर रुक जाएं और एक बड़े लश्कर को रवाना फ़र्मा दें। शुरू से लेकर अब तक आप देख चुके हैं कि आपके लश्करों के बारे में अल्लाह तआला का क्या फ़ैसला रहा है। अगर आपकी फ़ौज ने शिकस्त खाई तो वह आपकी शिकस्त की तरह न होगी। उन्होंने कहा ,जवाज़ पेश किया कि अगर आरम्भ में आप क़त्ल हो गए या शिकस्त खा गए तो मुझे अंदेशा है कि फिर मुस्लमान कभी तक़बीर नहीं पढ़ सकेंगे और न ही ला-इलाह इल्ला इल्लल्लाह की शहादत दे सकेंगे। इस वक़्त जब यह सारी बातें हो रही थीं तो हज़रत उमर रज़ि किसी शख़्स की तलाश में थे जिस को फ़ौज का कमांडर बना कर भेजा जाए। इसी दौरान उनकी ख़िदमत में, हज़रत उमर रज़ि की ख़िदमत में हज़रत सअद रज़ि का ख़त आया। हज़रत सअद रज़ि उस वक़्त नजद के सदक़ों पर मामूर थे। हज़रत उमर रज़ि ने अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि की बातें सुन के फ़रमाया अच्छा फिर मुझे कोई आदमी बतलाओ किस को बनाया जाए? किस के सपुर्द किया जाए? हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि ने कहा कि आदमी तो आपको मिल गया। हज़रत उमर रज़ि ने पूछा वह कौन है? हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि ने कहा कछार का शेर सअद बिन मालिक रज़ि। अर्थात यह बहुत बहादुर इन्सान है। बड़ा अच्छा कमांडर है। इस को कमांडर बना के भेजें। बाक़ी लोगों ने भी इस मश्वरे का समर्थन किया। यह भी तारीख़ तिबरी का हवाला है।

(तारीख़ तिबरी भाग 3 पृष्ठ 381-382 बाब ज़िक्र अमर अल-कादसिया प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1987 ई)

(अल-कामिल फ़ी तारीख़ भाग 2 पृष्ठ 287 सन् 13 ज़िक्र वकअ कस अन्नातिफ प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 2003 ई)

(फ़र्हंग सीरत सय्यद फ़ज़लुर्रहमान पृष्ठ 172 ज़व्वार अकैडमी कराची 2003 ई)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मदीना में विभिन्न क़बीलों और सहाबा को रिहायश के लिए जगह प्रदान की। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि के क़बीला को मस्जिद नबवी के पीछे में ख़जूरों के एक झुण्ड में रिहायश के लिए ज़मीन प्रदान की। फिर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि और हज़रत उमर रज़ि को बतौर जागीर भी ज़मीन प्रदान फ़रमाई। आले उम्र से यह जागीर फिर हज़रत ज़ुबेर रज़ि ने ख़रीद ली। हज़रत उमर रज़ि की औलाद से फिर यह जागीर हज़रत ज़ुबेर रज़ि ने ख़रीद ली। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि से वादा भी फ़रमाया कि अल्लाह तआला जब मुस्लमानों के हाथ पर शाम फ़तह करेगा तो तुम्हारे लिए अमुक़ हिस्सा ज़मीन होगा। अत: हज़रत उमर रज़ि के ख़िलाफ़त के युग में जब मुल्क शाम में इस्लाम को विजय मिलीं तो हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि को उनकी ज़मीन दी गई। इस इलाक़े का नाम सलील था जहां उन्हें ज़मीन देने का वादा दिया गया था।

(रोशन सितारे ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब भाग 2 पृष्ठ105-106)

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि को यह सआदत भी मिली कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके पीछे नमाज़ पढ़ी। अत: हज़रत मुग़ीरह रज़ि

ने वर्णन किया कि वह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ जंग तबूक में शरीक हुए। हज़रत मुग़ीरह रज़ि कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम शौच के लिए फ़ज्र की नमाज़ से पहले तशरीफ़ ले गए। मैंने आप के साथ पानी का मश्कीज़ा उठाया। जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरी तरफ़ वापस आए जहां मैं दूरी पर खड़ा था तो मैं मश्कीज़ा से आप के हाथों पर पानी डालने लगा और आप ने दोनों हाथ तीन बार धोए। फिर आप ने अपना मुबारक चेहरा धोया। फिर आप अपने बाज़ुओं को अपने जुब्बे से बाहर निकालने लगे लेकिन जुब्बा की आसतीनें तंग थीं इसलिए अपने हाथ जुब्बे के अंदर दाख़िल किए और अपने बाज़ूऊं को जुब्बे के नीचे से निकाल कर कोहनियों तक धोए। फिर आप ने अपने मौज़ूं पर मस्ह कर के उनको साफ़ किया। फिर आगे चल पड़े। मुग़ीरह रज़ि कहते हैं मैं भी आप के साथ आगे चला यहां तक कि हमने लोगों को पाया कि वह हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि को आगे कर चुके थे और वह उनको नमाज़ पढ़ा रहे थे। तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दो में से एक रकअत पाई अर्थात उस वक़्त तक फ़ज्र की नमाज़ की एक रकअत हो चुकी थी। दूसरी रकात थी सफ़ में खड़े हो गए और आप ने दूसरी रकअत लोगों के साथ पढ़ी। जब अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ने सलाम फेरा और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी नमाज़ पूरी करने के लिए खड़े हुए। दूसरी रकअत जो रह गई थी पूरी करने के लिए खड़े हुए तो इस बात ने मुस्लमानों में घबराहट पैदा कर दी और बहुत अधिक तस्बीह करने लगे। जब नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपनी नमाज़ ख़त्म कर ली तो लोगों की तरफ़ ध्यान दिया और फ़रमाया तुमने ठीक किया या यह कहा कि अच्छा किया। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने नमाज़ अपने वक़्त पर अदा करने की वजह से उन पर रशक़ का इज़हार किया कि बहुत अच्छा किया। हज़रत मुग़ैरह रज़ि कहते हैं कि जब हम पहुंचे थे तो उस वक़्त मैंने इरादा किया था कि हज़रत अब्दुर्रहमान को पीछे कर दूं मगर नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया रहने दो। उनको नमाज़ पढ़ाने दो। नमाज़ के बाद हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि हर नबी अपनी ज़िन्दगी में उम्मत के किसी नेक आदमी के पीछे नमाज़ ज़रूर पढ़ता है।

(सही मुस्लिम किताबुस्सलात बाब तक़दीम अलजमाइ मन युसल्ली बिहिम इज़ा ताख़्ख़ुर अल्इमाम हदीस 274)

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 95 मन बनी ज़हर बिन किलाब दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1990 ई)

एक और बड़ा सम्मान आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आप को बख़्शा। न सिर्फ यह कहा कि बड़ा अच्छा है, नमाज़ पढ़ाई बल्कि यह भी फ़रमाया कि नबी का, मेरा तुम्हारे पीछे नमाज़ पढ़ना इस बात की भी तसदीक़ है कि तुम नेक आदमी हो।

एक रिवायत में है कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ज़ुहर से पहले लम्बी नमाज़ पढ़ा करते थे अर्थात नफ़ल पढ़ा करते थे। जब अज़ान सुनते तो फ़ौरन नमाज़ के लिए तशरीफ़ ले आते।

(रोशन सितारे ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब भाग 2 पृष्ठ 107)

एक रावी वर्णन करते हैं कि मैंने देखा अब्दुर्रहमान रज़ि ख़ाना काबा का तवाफ़ कर रहे हैं और यह दुआ कर रहे हैं कि 'अल्लाह मुझे नफ़्स के बुख़ल से बचाइयो।

(रोशन सितारे ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब भाग 2 पृष्ठ110)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि की रिवायत है कि जिस साल हज़रत उमर रज़ि ख़लीफ़ा चुने गए इस साल आपने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि को अमीर हज निर्धारित किया था।

(तारीख़ अत्तिबरी भाग 3 पृष्ठ379-380 बाब ज़िक्र इब्तिदा अमर अल-क़ादसिया प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1987 ई)

अबू सलमा बिन अब्दुर्रहमान रज़ि से रिवायत है। वह वर्णन करते हैं कि एक बार हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास जूऊं की प्रचुरता की शिकायत लेकर हाज़िर हुए और निवेदन किया हे रसूलुल्लाह क्या आप मुझे इजाज़त फ़रमाएँगे कि मैं रेशमी लिबास पहन लूं। इस वक़्त किसी वजह से जुएँ पैदा हो गईं। सिर में शायद पैदा हो गई होंगी। आम जो सादा कपास का लिबास है इस में ख़त्म नहीं हो रही थीं तो उस वक़्त आपने इजाज़त ली कि रेशमी लिबास पहन लूं। इस से ज़रा बचत हो जाती है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनको इजाज़त प्रदान फ़र्मा दी कि ठीक है पहन लिया करो। जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ि वफ़ात पा गए और हज़रत उमर रज़ि खिलाफ़त पर निर्वाचित हुए तो हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि अपने बेटे अबू सलमा के साथ हज़रत उमर रज़ि के पास हाज़िर हुए। अबू सलमा ने रेशमी क़मीज़ पहन रखी थी। हज़रत उमर रज़ि ने फ़रमाया यह क्या पहन रखा है? फिर उन्होंने अर्थात हज़रत उमर रज़ि ने अबू सलमा के गिरेबान में हाथ डाल कर क़मीज़ फाड़ दी। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ने हज़रत उमर रज़ि से कहा क्या आपको मालूम नहीं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुझे इजाज़त इनायत फ़रमाई थी। तो हज़रत उमर रज़ि ने फ़रमाया आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने आपको इसलिए इजाज़त प्रदान फ़रमाई थी कि आपने उनके हुज़ूर जूओं की शिकायत की थी। यह इजाज़त आपके सिवा किसी के लिए नहीं है।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 96 अब्दुर्रहमान बिन औफ़ दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1990 ई)

सअद बिन इब्राहीम से रिवायत है कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि एक चादर पहना करते थे या किसी वक़्त एक चादर पहनी हुई थी जिसकी क़ीमत चार या पाँच सौ दिरहम थी।

(अत्तबकातुल कुबरा ले इब्न सअद भाग 3 पृष्ठ 97 अब्दुर्रहमान बिन औफ़ दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1990 ई)

अर्थात ऐसे हालात थे कि इंतिहाई क़ीमती लिबास भी पहनते थे। अर्थात अल्लाह तआला के फ़ज़ल देखें कि जब हिजरत की तो कुछ भी पास नहीं था लेकिन इस के बाद क़ीमती लिबास भी पहना और बेशुमार जायदाद भी अल्लाह तआला ने उनके लिए पैदा कर दी।

हज़रत अबू बकर रज़ि ने अपनी मौत की बीमारी के समय हज़रत उमर रज़ि को अपने बाद ख़लीफ़ा निर्धारित कर दिया था। जब आपने इस का इरादा किया था उस वक़्त हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि को बुलाया और उनसे कहा कि बताओ उमर रज़ि के बारे में तुम्हारी क्या राय है? हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ने कहा हे ख़लीफ़ रसूल !वह औरों की तुलना में आपकी राय से भी अफ़ज़ल हैं मगर उनके मिज़ाज में ज़रा तेज़ी है। हज़रत अबूबकर रज़ि ने कहा कि यह तेज़ी इस वजह से थी कि वह मुझ को नर्म देखते थे। मैं बहुत नर्म था इसलिए वह ज़रा तेज़ी दिखाते थे ताकि मामला balanced रहे। फिर हज़रत अबू बकर रज़ि ने फ़रमाया कि जब मामला उनके सपुर्द होगा तो इस किस्म की अक्सर बातें वह छोड़ देंगे। फिर इस में शिद्दत नहीं देखोगे। फिर फ़रमाया हे अबी मुहम्मद मैंने उनको ध्यान से देखा है कि जिस वक़्त किसी शख़्स पर किसी मामला में मैं ग़ज़बनाक होता था अर्थात हज़रत अबू बकर रज़ि फ़र्मा रहे हैं जब मुझे किसी बात पर ग़ुस्सा आता था तो उमर मुझ को उसी पर राज़ी होने का मश्वरा देते थे। इस वक़्त हज़रत उमर रज़ि का मश्वरा नरमी का होता था। और जब कभी में किसी पर नर्म होता था तो मुझको इस पर सख़्ती करने का मश्वरा देते थे। फिर हज़रत अबू बकर रज़ि ने फ़रमाया कि हे अबू मुहम्मद यह बातें जो मैं ने तुमसे कही हैं तुम उनका किसी और से ज़िक्र न करना। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ने कहा अच्छा।

(तारीख़ अत्तिबरी भाग 3 ज़िक्र इस्तख़लाफ़ा उम्र बिन ख़ताब पृष्ठ 352 प्रकाशन दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1987 ई)

फ़तह मक्का के बाद जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने विभिन्न तरफ़ कुछ वफ़ूद भेजे तो हज़रत ख़ालिद बिन वलीद रज़ि को बनू जज़ीमह: की तरफ़ भेजा। बनू जज़ीमह: जाहिलियत में हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि के पिता औफ़ और हज़रत ख़ालिद के चाचा फ़ाकिह बिन मुग़ीरह का क़तल किया था। हज़रत ख़ालिद से वहां ग़लती से इस क़बीला के एक शख़्स का क़तल हो गया। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस बात का ज्ञान हुआ तो आप ने नापसंद किया। आप ने इस की देयत भी अदा की और जो कुछ हज़रत ख़ालिद रज़ि ने उन से लिया था उस की क़ीमत अदा कर दी। अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि को हज़रत ख़ालिद रज़ि के इस काम का इलम हुआ तो हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि ने हज़रत ख़ालिद रज़ि को कहा कि तुम ने उस को इसलिए क़तल किया कि उन्होंने तुम्हारे चाचा को क़तल किया था? हज़रत ख़ालिद रज़ि ने जवाब में सख़्ती से कहा कि उन्होंने तुम्हारे बाप को भी क़तल किया था। हज़रत ख़ालिद रज़ि ने मज़ीद कहा तुम जो हम से पहले ईमान ले आए तो तुम इन दिनों को बहुत लम्बा करना चाहते हो अर्थात उनसे तुम बड़ा फ़ायदा उठाना चाहते हो। अर्थात कि तुम इबतिदाई ईमान लाने वालों में से हो इसलिए बड़ा सम्मान समझते हो। इस वजह से मुझे यह बात कह रहे हो। यह बात नबी अक़रम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पहुंची क्योंकि

हज़रत ख़ालिद रज़ि ने ज़रा ग़ुस्सा और नाराज़गी का इज़हार किया था। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब यह बात पहुंची तो आप ने फ़रमाया मेरे अस्हाब को छोड़ दो। क़सम है इस ज़ात की जिसके हाथ में मेरी जान है अगर तुम में से कोई उहद पहाड़ जितना सोना भी ख़र्च करे तो उनके मामूली ख़र्च को भी नहीं पहुंच सकता। इन लोगों का यह बहुत बड़ा स्थान है।

(रोशन सितारे ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब भाग 2 पृष्ठ 108-109)

(उसदुल ग़ाबह फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 3 पृष्ठ 479 अब्दुर्रहमान बिन औ दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत

इन आरम्भिक सहाबा की क़ुर्बानियां बहुत ज़्यादा थीं उनका मुक़ाबला ही नहीं किया जा सकता। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि के बारे में फ़रमाया कि वह मुस्लमानों के सरदारों के सरदार हैं और यह भी फ़रमाया कि अब्दुर्रहमान आसमान में भी अमीन है और ज़मीन में भी अमीन है।

(अल्इस्तेयाब फ़ी मअरफतिस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 846 अब्दुर्रहमान बिन औफ़ दारुल जैल बेरूत)

हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि कई बार इतने सख़्त बीमार हुए कि बेहोशी तारी हो गई। उनकी पत्नी के मुँह से चीख़ निकल गई अर्थात काफ़ी बुरी हालत हो गई तो इस ग़म की हालत में उनकी चीख़ निकली। बहरहाल जब उनको उस के बाद सेहत में बेहतरी भी आ गई। तबीयत में जब उनको इफ़ाक़ा हुआ तो कहने लगे कि मुझे जब बेहोशी छाई हुई थी तो मेरे पास दो आदमी आए। इस वक़्त जो नज़ारा मैंने देखा कि इस हालत में दो शख़्स आए और उन्होंने कहा चलो ग़ालिब अमीन ज़ात के सामने तुम्हारा फ़ैसला कराते हैं। तो इन दोनों को एक शख़्स और मिला, एक तीसरा शख़्स मिला और कहने लगा उसे मत ले जाओ क्योंकि यह माँ के पेट से ही नेक है। यह नज़ारा हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि ने अपने बारे में देखा।

(अल-असाब फ़ी तमीज़िस्सहाब भाग 4 पृष्ठ 291 अब्दुर्रहमान बिन औफ़ दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1995 ई)

नौफल बिन अयास हुज़ली कहते हैं कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि हमारी मज्लिस में बैठा करते थे। वह बेहतरीन साथी थे। एक दिन वह हमें अपने घर ले गए। नहा कर के बाहर आए और हमारे पास एक बर्तन लाए जिसमें रोटी और गोश्त था। फिर पता नहीं किया हुआ कि रोने लगे। हम ने पूछा अबू मुहम्मद आप क्यों रो रहे हैं। कहने लगे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इस हाल में दुनिया से विदा हुए कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के घर वाले ख़ाना जो की रोटी से सैर नहीं हुए अर्थात जो की रोटी भी पूरी तरह नहीं मिलती थी। फिर फ़रमाया कि मैं नहीं समझता कि जिस चीज़ के लिए हमें देरी मिली वह हमारे लिए बेहतर हो।

(अल-असाब फ़ी तमीज़िस्सहाब भाग 4 पृष्ठ 291 अब्दुर्रहमान बिन औफ़ दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1995 ई)

अर्थात हमें जो इतना समय ज़िन्दा रहने का अवसर मिला है यह हमारे लिए बेहतर है या कोई परीक्षा या इम्तिहान है। यह थे सहाबा की भवानाएं। एक तो अल्लाह तआला का ख़ौफ़ और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके घर वालों के लिए भावनाओं का इज़हार। इन्हीं भावनाओं का सिर्फ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके ख़ानदान से सम्बन्ध नहीं था बल्कि सहाबा के लिए भी इस उदाहरण वाली मुहब्बत का यह इज़्हार होता था जो आपस में सहाबा को एक दूसरे से थी। इसी अन्तर्गत में एक घटना आती है कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि के पास एक दिन इफ़तारी के समय खाना लाया गया। विभिन्न तरह के खाने जब दस्तर ख़वान पर लगाए गए तो हज़रत अब्दुर्रहमान रज़ि ने एक लुक़मा उठाया। विभिन्न किस्म के खाने आए और एक लुक़मा इस में से आप ने खाने के लिए उठाया। जब लुक़मा मुँह में डाला तो रिक़्क़त छा गई और यह कह कर खाने से हाथ उठा लिए कि मसअब बिन उमैर रज़ि उहद में शहीद हुए। वह हमसे बेहतर थे। उनकी चादर का ही कफ़न पहनाया गया। अर्थात कफ़न के लिए कपड़ा नहीं था तो जो चादर उन्होंने ओढ़ी हुई थी उसी का कफ़न पहनाया गया और इस कफ़न की क्या हालत थी? अगर पांव ढाँकते तो सिर नंगा हो जाता था, सिर ढाँकते थे तो पांव नंगे हो जाते थे। फिर हज़रत अब्दुर्रहमान कहने लगे कि हमज़ा रज़ि शहीद हुए। वह भी मुझसे बेहतर थे लेकिन हमें माली फ़राख़ी और दुनियावी सुविधाएं प्रदान की गई और हमें इस से हिस्सा भरपूर मिला। मुझे डर है कि हमारी नेकियों का बदला हमें शीघ्र इस दुनिया में मिल गया। इस के बाद वह रोने लगे और खाना छोड़ दिया। यह ख़ौफ़ था। यह अल्लाह तआला की ख़शीयत थी।

(रोशन सितारे ग़ुलाम बारी सैफ़ साहिब भाग 2 पृष्ठ111-112)

उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ि से रिवायत है कि उनके पास हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि आए और कहा कि हे मेरी माँ मुझे अंदेशा है कि माल की अधिकता मुझे हलाक न कर दे क्योंकि मैं क़ुरैश में सबसे ज़्यादा मालदार हूँ। उन्होंने जवाब दिया बेटा ख़र्च करो अर्थात अल्लाह तआला की राह में ख़र्च करो तो कोई हलाकत का सवाल नहीं। क्योंकि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह कहते हुए सुना है कि मेरे कुछ साथी ऐसे भी होंगे कि मेरी उनसे जुदाई के बाद वह दोबारा मुझे कभी नहीं देख सकेंगे अर्थात कुछ लोग ऐसे होंगे कि इस मुक़ाम पर नहीं पहुंच सकेंगे। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि जब बाहर निकले तो रास्ते में हज़रत उमर रज़ि से मुलाक़ात हो गई। उन्होंने हज़रत उमर रज़ि को यह बात बताई तो हज़रत उमर रज़ि ख़ूद हज़रत उम्मे सलमा रज़ि के पास आए और कहा कि मैं आपको अल्लाह तआला की क़सम देकर पूछता हूँ कि मुझे बताईए कि क्या मैं उनमें से हूँ? यह जो आपने बताया था कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझ से नहीं मिलेंगे। जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को दोबारा नहीं देख सकेंगे मैं उनमें से हूँ? हज़रत उम्मे सलमा रज़ि ने फ़रमाया नहीं। हज़रत उमर रज़ि को फ़रमाया कि नहीं आप उन में से नहीं हैं लेकिन आपके बाद में किसी के बाद यह नहीं कह सकती कि वह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देख सकेंगे या नहीं।

(अल-इस्तेयाब फ़ी मअरफ़तिस्सहाबा भाग 2 पृष्ठ 848-849 अब्दुर्रहमान बिन औफ़ दारुल जैल बेरूत)

अर्थात किसी के बारे में यक़ीन से नहीं कह सकती कि आप को ज़रूर देखेंगे लेकिन यह भी वाज़िह हो जैसा कि पहले भी ज़िक्र हो चुका है कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि तो उन लोगों में से हैं जो अशरा मब्शरा में से थे जिन को जन्नत की बिशारत भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दी थी लेकिन फिर भी उन लोगों में ख़ुदा तआला का ख़ौफ़ और ख़शीयत इतनी थी कि हर समय फ़िक्र में रहते थे और हज़रत उम्मे सलमा रज़ि की यह बात सुन कर भी आपने फ़ौरन बहुत ज़्यादा सदक़ा तथा ख़ैरात किया।

एक रिवायत है हज़रत अब्दुल्लाह बिन अब्बास रज़ि वर्णन करते हैं कि जब हज़रत उमर रज़ि शाम की तरफ़ निकले यहां तक कि वह सरग़ स्थान पर पहुंचे। सरग़ जो है वह शाम और हिजाज़ के सरहदी इलाक़ा में स्थित वादी तबूक की एक बस्ती का नाम है जो मदीना से तेरह रातों की दूरी पर है। अर्थात उस वक़्त जो सवारियों का प्रबन्ध था उनके साथ तेरह रातें निरन्तर चलते रहें तो इस की इतनी दूरी थी। वहां पहुंचे तो आपकी मुलाक़ात फ़ौजों के कमांडर हज़रत अबू उबैदह बिन अल्जर्राह रज़ि और उनके साथियों से हुई। यह घटना अठारह हिज्री में हज़रत उमर रज़ि के ख़िलाफ़त के युग में शाम की फ़ुतूहात के बाद का है। इन लोगों ने हज़रत उमर रज़ि को बताया कि शाम के मुल्क में ताऊन की महामारी फूट पड़ी है। हज़रत इब्न अब्बास रज़ि कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि ने कहा कि मेरे पास मश्वरे के लिए अव्वलीन मुहाजिरीन को बुलाओ। शुरू के जो मुहाजिरीन हैं उनको बुलाओ । वे क्या मश्वरा देते हैं। हज़रत उमर रज़ि ने उनसे मश्वरा किया मगर मुहाजिरीन में मतभेद हो गया। कुछ का कहना था कि इस मामला से पीछे नहीं हटना चाहिए अर्थात सफ़र जारी रखना चाहिए जबकि कुछ ने कहा कि इस लश्कर में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सहाबा किराम शामिल हैं और उनको इस महामारी में डालना मुनासिब नहीं। बेहतर यह है कि वापस चला जाए। हज़रत उमर रज़ि ने मुहाजिरीन को भिजवा दिया और फिर अन्सार को मश्वरे के लिए बुलाया। उनसे मश्वरा लिया मगर अन्सार की राय में भी मुहाजिरीन की तरह मतभेद हो गया। कुछ ने कहा वापस चले जाएं और कुछ ने कहा आगे चलें। हज़रत उमर रज़ि ने अन्सार को भिजवाया और फिर फ़रमाया क़ुरैश के बूढ़े लोगों को बुलाओ। क़ुरैश के इन बूढ़े

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह ख़ामिस

ख़िलाफत का निज़ाम भी अल्लाह तआला और उस के रसूल के आदेशों और निज़ाम का हिस्सा है।

(ख़ुत्बा जुम्अ: 24 मई 2019 ई)

तालिबे दुआ

मुहम्मद शुएब सुलेजा पुत्र जनाब मुहम्मद ज़ाहिद सुलेजा मरहूम तथा फैमली, अहमदिया जमाअत कानपुर(उत्तर प्रदेश)

लोगों को बुलाओ जो फ़तह मक्का के वक़्त इस्लाम क़बूल कर के मदीना आए थे। उनको बुलाया गया उन्होंने एक ज़बान हो कर मश्वरा दिया कि इन लोगों को साथ लेकर वापस लौट चलें। कोई ज़रूरत नहीं। वहां महामारी फूटी हुई है वहां जाने की ज़रूरत नहीं है और महामारी के इलाक़े में लोगों को न लेकर जाएं। हज़रत उमर रज़ि ने उनका मश्वरा मान के लोगों में वापसी का ऐलान करवा दिया। हज़रत अबू उबैदा बिन जर्राह रज़ि ने इस अवसर पर सवाल किया क्या अल्लाह की तक़दीर से फ़रार मुम्किन है? आप इस महामारी के डर से वापस जा रहे हैं तो यह तो अल्लाह की तक़दीर है, बीमारी फैली हुई है क्या आप इस से फ़रार हो सकते हैं। हज़रत उमर रज़ि ने हज़रत अबू उबैदह रज़ि से फ़रमाया कि हे अबू उबैदा काश तुम्हारे इलावा किसी और ने यह बात कही होती। हाँ हम अल्लाह की एक तक़दीर से फ़रार होते हुए अल्लाह ही की एक दूसरी तक़दीर की तरफ़ जाते हैं। फिर हज़रत उमर रज़ि ने आगे उनको उस की मिसाल दी कि अल्लाह तआला की तक़दीर किया है। मिसाल देते हुए फ़रमाया कि अगर तुम्हारे पास ऊंट हों और तुम उनको लेकर ऐसी वादी में उतरो जिसके दो किनारे हूँ। एक हरियाली वाली हो और दूसरा ख़ुशक तो क्या ऐसा नहीं कि अगर तुम अपने ऊंटों को हरी जगह पर चराओ तो वह अल्लाह की तक़दीर से है और अगर तुम उनको ख़ुशक जगह पर चराओ तो वह भी अल्लाह की तक़दीर से ही है। अब अल्लाह की तक़दीर ने तुम्हारे ऊपर दो ऑपशन दे दिए हैं एक हरी चरागाह है एक जहां बिलकुल ख़ुशक जगह है, बंजर है, इक्का दुक्का झाड़ियाँ हैं या थोड़ा बहुत घास है। अब तुम कह दो कि यह सब्ज़ा अपनी तक़दीर से उगा है और यह जो ख़ुशकी है वो किसी और तक़दीर से है। यह दोनों अल्लाह तआला की तक़दीरें हैं। अब तुमने फ़ैसला करना है। कौन सी बेहतर ऑपशन लेनी है। ज़ाहिर है तुम हरी जगह पर चराओगे। रावी कहते हैं कि हज़रत उमर रज़ि ने उनको यह बातें कहीं। इस के बाद कहते हैं कि इतने में हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि भी आ गए जो पहले अपनी किसी व्यस्तता की वजह से हाज़िर नहीं हो सके थे। उन्होंने निवेदन की कि मेरे पास इस मसले का इल्म है। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ने कहा आप लोगों से मश्वरा ले रहे हैं मैं बताता हूँ मुझे इस का इलम है। मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यह फ़रमाते हुए सुना है कि जब तुम किसी जगह के बारे में सुनो कि वहां कोई महामारी फूट पड़ी है तो वहां मत जाओ और अगर कोई बीमारी किसी ऐसी जगह पर फूट पड़े जहां तुम रहते हो तो वहां से फ़रार होते हुए बाहर मत निकलो। जहां महामारी फूट पड़ी है वहां जाना नहीं और जिस इलाक़े में रहते हो वहां महामारी है तो फिर वहां से इस वक़्त बाहर न निकलो और अपने आपको वहीं रखो ताकि वह मर्ज़ और महामारी जो है वो बाहर दूसरे लोगों में न फैले।

आजकल लॉक डाउन में दुनिया इस पर जो अनुकरण कर रही है जिन्होंने वक़्त पर किया वहां काफ़ी हद तक इस को सीमित कर लिया। बीमारी को contain कर लिया। जहां नहीं कर सके और लापरवाई की वहां यह फैलती जा रही है। बहरहाल यह बुनियादी बात आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने शुरू में अपने सहाबा को बता दिया। इस पर हज़रत उमर रज़ि ने अल्लाह तआला की प्रशंसा वर्णन की और वापस लौट गए।

(सही बुख़ारी किताबुल तिब बाब मा युज़िकर फित्ताऊन हदीस नम्बर 5729)

हज़रत मिसवर बिन मख़रम: वर्णन करते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि जब सही हालत में थे तो आपसे दरख़ास्त की जाती कि आप किसी को ख़लीफ़ा निर्धारित फ़र्मा दें लेकिन आप इन्कार फ़रमाते। फिर एक दिन आप मिन्बर पर तशरीफ़ लाए और कुछ बातें कहीं और फ़रमाया अगर मैं मर जाऊं तो तुम्हारा मामला इन छ: लोगों के ज़िम्मे होगा जिन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को इस हालत में छोड़ा है जबकि आप इन सबसे राज़ी थे। हज़रत अली बिन अबू तालिब रज़ि और आपके नज़ीर हज़रत ज़ुबैर बिन अलअवाम रज़ि, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि और आपके नज़ीर हज़रत उस्मान बिन औफ रज़ि और हज़रत तलहा बिन उबैयदुल्लाह रज़ि और आपके नज़ीर हज़रत सअद बिन मालिक रज़ि। फ़रमाया ख़बरदार मैं तुम सबको फ़ैसला करने में अल्लाह का तक़्वा धारण करने और तक़सीम में इन्साफ़ करने का हुक्म देता हूँ। अबू जाफ़िर रज़ि वर्णन करते हैं कि हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि ने शूरा के सदस्यों से कहा कि अपने मामला में आपस में मश्वरा करो फिर अगर दो दो हूँ तो फिर दुबारा मश्वरा करो और अगर चार और दो हूँ तो अक्सरीयत की संख्या को धारण करो। ज़ैद बिन अस्लम अपने पिता से वर्णन करते हैं कि हज़रत उमर रज़ि ने फ़रमाया कि अगर तीन और तीन की राय मुत्तफ़िक़ हो जाए तो जिस तरफ़ हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि होंगे इस तरफ़ के लोगों की सुनो और इताअत करो।

अब्दुर्रहमान बिन सईद रज़ि वर्णन करते हैं कि जब हज़रत उम्र रज़ी अल्लाह तआला अन्हो ज़ख़्मी हुए तो आपने फ़रमाया सुहैब रज़ि तुम लोगों को नमाज़ पढ़ाएँगे अर्थात हज़रत सुहैब रज़ि को इमामुस्सलात निर्धारित किया और यह बात आपने तीन बार कही। अपने इस मामला में परामर्श करो और यह मामला इन छ: लोगों के सपुर्द है। जो शख़्स तुम्हारे हुक्म में शंका करे अर्थात जो तुम्हारा विरोध करे तो इस की गर्दन उड़ा दो। अगला हुक्म जो है जब ज़रूरत पड़े, जब ख़िलाफ़त का चुनाव हो तो उन छ: लोगों पर होगा। इस वक़्त तक हज़रत सुहैब रज़ि जो हैं वे इमामत करवाते रहेंगे। हज़रत अन्स बिन मालिक रज़ि वर्णन करते हैं कि हज़रत उमर रज़ि ने अपनी वफ़ात से कुछ क्षण पहले हज़रत अबू तलहा की तरफ़ पैग़ाम भेजा और फ़रमाया हे अबू तलहा रज़ि तुम अपनी क़ौम अन्सार में से पचास लोगों को लेकर इन शूरा के सदस्यों पास चले जाओ और उन्हें तीन दिन तक न छोड़ना यहां तक कि वे अपने में से किसी को अमीर न चुन लें। हे अल्लाह तू उन पर मेरा ख़लीफ़ा है।

इस्हाक़ बिन अब्दुल्लाह वर्णन करते हैं कि हज़रत अबू तलहा रज़ि अपने साथियों के साथ कुछ देर हज़रत उमर रज़ि की क़ब्र पर रुके। फिर उस के बाद अस्हाब शूरा के साथ रहे। फिर जब इन अस्हाब शूरा ने अपना मामला हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि के सपुर्द कर दिया कि वह अधिकार रखते हैं कि जिसको भी अमीर निर्धारित कर दें तो हज़रत अबू तलहा रज़ि अपने साथियों समेत उस वक़्त तक हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि के घर के दरवाज़ा पर रहे जब तक कि हज़रत उसमान रज़ि की बैअत न की गई।

हज़रत सलमा बिन अब्बू सलमा अपने पिता से रिवायत करते हैं कि सबसे पहले हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ने हज़रत उसमान रज़ि की बैअत की। फिर उस के बाद हज़रत अली रज़ि ने। हज़रत उमर रज़ि के आज़ाद किए गए ग़ुलाम उम्र बिन उमैरह: अपने दादा से रिवायत करते हैं कि सबसे पहले हज़रत अली रज़ि ने हज़रत उस्मान रज़ि की बैअत की। फिर उस के बाद सब लोगों ने बैअत की।

(अत्तबकातुल कुबरा भाग 3 पृष्ठ 44 से 46 ज़िक्र अश्शूरा वमा कान मिन अमरे हिम, ज़िक्र बैअत उसमान...,दारुल कुतुब अल्इलिमया बेरूत 1990 ई)

बुख़ारी की एक रिवायत यह भी है कि जब हज़रत उमर रज़ि नमाज़ के शुरू में ही जब आपने अल्लाहो-अकबर कहा और पढ़ाने के लिए खड़े हुए क़ातिलाना हमला हुआ तो उस वक़्त ज़ख़्मी हालत में हज़रत उमर रज़ि ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि का हाथ पकड़ कर इमामत के लिए आगे कर दिया , वह क़रीब थे और इस वक़्त हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ने संक्षिप्त नमाज़ पढ़ाई।

(सही अल-बुख़ारी किताबुल फ़ज़ाइल अस्हाबुन्नबी बाब किस्सतुल बैए वल इत्तफाक़ अली उसमान बिन अफ्फान हदीस 3700)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि हज़रत उसमान रज़ि की ख़िलाफ़त के च्यन के अवसर पर हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि की भूमिका वर्णन करते हुए यूं फ़रमाते हैं। पहले दो रिवायतें आई हैं। उनमें से एक जगह सिर्फ यह मतेभद है। बाक़ी तो वही बातें हैं। बहरहाल हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि फ़रमाते हैं कि हज़रत

अल्लाह तआला का उपदेश

رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ النَّارِ (आले इम्रान 17)

हे हमारे रब्ब निसन्देह हम ईमान ले आए

अतः हमारे गुनाह माफ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा।

तालिबे दुआ

MUHAMMAD MAJEED AND FAMILY

AMEER DIST: ROUPR. PUNJAB

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अगर तुम चाहते हो कि तुम्हें दोनों दुनिया की फत्ह हासिल हो और लोगों के दिलों पर फत्ह पाओ तो पवित्रता धारण करो, और अपनी बात सुनो, और दूसरों को अपने उच्च आचरण का नमूना दिखाओ तब अलबत्ता सफल हो जाओगे।"

तालिबे दुआ

धानू शेरपा

सैक्रेट्री जमाअत अहमदिया देवदमतांग (सिक्कम)

उमर रज़ि जब ज़ख़्मी हुए और आपने महसूस किया कि अब आपका आख़री वक़्त क़रीब है तो आपने छः आदमियों के बारे में वसीयत की कि वे अपने में से एक को ख़लीफ़ा निर्धारित कर लें। वे छः आदमी यह थे। हज़रत उसमान रज़ि,हज़रत अली रज़ि , हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि, हज़रत सअद बिन वकास रज़ि, हज़रत ज़ुबेर रज़ि और हज़रत तलहा रज़ि। इस के साथ ही हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि को भी आपने इस मश्वरे में शरीक करने के लिए निर्धारित फ़रमाया मगर ख़िलाफ़त का हक़दार क़रार न दिया और वसीयत की कि यह सब लोग तीन दिन में फ़ैसला करें और तीन दिन के लिए हज़रत सुहैब रज़ि को इमामुस्सलात निर्धारित किया और मश्वरा की निगरानी मिक़दाद बिन असवद रज़ि के सपुर्द की और उन्हें हिदायत की कि वे सबको एक जगह जमा कर के फ़ैसला करने पर मजबूर करें और ख़ुद तलवार लेकर दरवाज़े पर पहरा देते रहें।

पिछली रिवायतों में हज़रत तलहा रज़ि का ज़िक्र आ रहा है लेकिन आपने विभिन्न जगह से अपना जो नतीजा लिया है वह यह है कि मिक़दाद बिन अस्वद के सपुर्द पहरा किया गया था जब तक ख़िलाफ़त का चुनाव हो रहा है और फ़रमाया कि जिस पर अधिक लोगों की राय से सहमति हो सब लोग उस की बैअत करें और अगर कोई इन्कार करे तो उसे क़तल कर दो लेकिन अगर दोनों तरफ़ तीन तीन हो जाएं तो अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि उनमें से जिसको तजवीज़ करें वह ख़लीफ़ा हो। अगर इस फ़ैसले पर राज़ी न हूँ तो जिस तरफ़ हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि हों वह ख़लीफ़ा हो। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ि के अनुसार हज़रत तलहा रज़ि उस वक़्त मदीना में नहीं थे। इसलिए पाँच लोग थे। पांचों लोगों ने मश्वरा किया मगर कोई नतीजा न निकला। आप फ़रमाते हैं कि आख़िर पाँच लोगों ने मश्वरा किया। हज़रत तलहा रज़ि के इलावा जो बाक़ी पाँच लोग थे उन्होंने मश्वरा किया। कोई नतीजा नहीं निकला। बहुत लंबी बेहस के बाद हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ने कहा अच्छा जो शख़्स अपना नाम वापस लेना चाहता है वह बोले। जब सब ख़ामोश रहे तो हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि ने कहा कि सबसे पहले मैं अपना नाम वापस लेता हूँ। फिर हज़रत उसमान रज़ि ने कहा। फिर बाक़ी दो ने। हज़रत अली रज़ि ख़ामोश रहे। आख़िर उन्होंने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि से वादा लिया कि वह फ़ैसला करने में कोई रियाइत नहीं करेंगे। उन्होंने अह्द किया और सब काम उनके सपुर्द हो गया। अर्थात हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि जो भी फ़ैसला करेंगे। कोई रियाइत नहीं , तरफ़-दारी नहीं होगी। जब अह्द हो गया तो सारा काम हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि के सपुर्द हो गया। हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि तीन दिन मदीना के हर घर गए और मर्दों और औरतों से पूछा कि उनकी राय किस शख़्स की ख़िलाफ़त के हक़ में है। सब ने यही कहा कि उन्हें हज़रत उसमान रज़ि की ख़िलाफ़त स्वीकार है अत: उन्होंने हज़रत उसमान रज़ि के हक़ में अपना फ़ैसला दे दिया और वह ख़लीफ़ा हो गए

(उद्धरित ख़िलाफ़त-ए-राशिदा , अन्वारुल उलूम भाग 15 पृष्ठ 484-485)

इस विषय की एक और रिवायत भी है। वह काफ़ी लंबी है। बाक़ी हिस्सा हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि के ज़िक्र में बाद में वर्णन होगा तो इस की ज़रूरत हुई तो वह भी बाद में अलग वर्णन हो जाएगी इंशा अल्लाह। या हो सकता है कि वह लंबी रिवायत जो मेरे ख़्याल में हज़रत उसमान रज़ि की ख़िलाफ़त के ज़िमन में है या हज़रत उमर रज़ि की ज़िन्दगी के बारे में है तो वह वहां भी वर्णन हो सकती है। बहरहाल उस के बावजूद भी हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ रज़ि की ज़िन्दगी की घटनाओं का, उनकी नेकियों का, उनकी सीरत का कुछ हिस्सा है। वह इंशा अल्लाह तआला अगले ख़ुत्बे में वर्णन होगा।

(अलफ़ज़ल इन्टरनैशनल10 जुलाई 2020 ई पृष्ठ 5 से 9)

इन्शा अल्लाह तआला ईद इतवार को चौबीस तारीख़ को होगी।

☆ ☆

इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"

(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)

तालिबे दुआ

KHALEEL AHMAD

S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)

पृष्ठ 2 का शेष

आफ़िसरों और कई फ़ौजीयों के प्रतिनिधि 10 की संख्या में अपने फ़ौजी लिबास और सम्मानों के साथ अपने अपने झंडे ऊंचा किए हुए, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ को गार्ड आफ़ ऑनर प्रस्तुत करने के लिए दोनो तरफ लइनों में खड़े थे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ उनके मध्य से गुज़रते हुए हाल में तशरीफ़ ले आए जहां समस्त मेहमान अपनी अपनी कुर्सियों पर बैठ चुके थे।

प्रोग्राम का आरम्भ तिलावत क़ुरआन करीम से हुआ जो आदरणीय हाफ़िज़ बाबर मन्सूर साहिब ने प्रस्तुत की और इस का फ्रैंच अनुवाद फ़ैसल JEMAI सदर स्थानीय जमाअत ने प्रस्तुत किया। उस के बाद अमीर साहिब फ्रांस ने अपना स्वागत सम्बोधन प्रस्तुत किया। इस के बाद मुहम्मद अतहर काहलों साहिब सैक्रेटरी उमूर ख़ारिजा जमाअत Hurtigheim ने जमाअत के परिचय पर आधारित ब्रीफ प्रस्तुत किया

सम्मान्नीय मेहमानों के सम्बोधन

इस के बाद Hurtigheim के मेयर Jean Jacques Ruch ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत करते हुए कहा: मैं अहमदियों के पांचवें ख़लीफ़ा हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद को इस शहर में स्वागत कहता हूँ। तीन साल पहले बुनियाद रखने के आयोजन पर आप लोगों ने मेरी गर्म-जोशी की कमी पर तब्सरा किया। इस वक़्त मैंने जवाब दिया था कि हम अपने शहर में काम पूर्ण होने के बाद ख़ुशी मनाते हैं। अत: आज ख़ुशी का अवसर है और मेरे समस्त साथी के साथ जो आज यहां मौजूद हैं, वे उस के साथ हैं।

हमारे जैसे देहाती क्षेत्र में एक मस्जिद का उद्घाटन करना एक निहायत अहम अवसर है। खासतौर पर हमारे क्षेत्र में जहां कई पुरानी रिवायतें सदियों से चली आ रही हैं। मैं ऐलान करते हुए कहता हूँ कि जितने लोग यहां मौजूद हैं वे सब के सब आपका सहयोग करने वाले हैं। लेकिन बहुत से लोग जो आपकी जमाअत को नहीं जानते , वे मुझसे पूछते हैं और पूछते रहेंगे कि मैंने इस मस्जिद के बनाने के लिए क्यों आज्ञा दी। अब यह लोग मेरे इस आयोजन में शामिल होने की वजह पूछेंगे। मैं आपको और उनको यह जवाब देता हूँ कि मेरा व्यवहार हमारे क़ानून के अनुसार है। आज में यहां हुकूमती प्रतिनिधि के तौर पर आया हूँ। हमारी रियासत सैकूलर इज़्म, डायलॉग और बराबरी की हामी है। हमारी रियासत का माटो आज़ादी, बराबरी और भाईचारा है और यह motto जमाअत अहमदिया का motto"मुहब्बत सब के लिए , नफ़रत किसी से नहीं" जैसा है लेकिन दूसरों को क़ाइल करने के लिए वक़्त लगेगा और हमें सावधान रहना पड़ेगा। दूसरों को क़ाइल करने में कि मस्जिदों की भी हमारे देहात में ज़रूरत है, इस में कुछ वक़्त लगेगा। आपकी जमाअत हमारे शहर में 7 साल से मौजूद है और स्थानीय लोगों ने आपको स्वागत कहा है। आपकी जमाअत भी हमारे विभिन्न प्रोग्रामों में शिरकत करती है। अगर हम इस तरह साथ-साथ काम करेंगे तो वक़्त के साथ-साथ सब कुछ ठीक हो जाएगा।

इस के बाद Truchtersheim की मेयर और Kochesberg म्यूनि-सपेलिटी के सदर Justin Vogel ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत करते हुए कहा: इस मस्जिद की उद्घाटन आयोजन में शामिल होना मेरे लिए सम्मान का कारण है। हमारे क्षेत्र में इस मस्जिद का उद्घाटन एक तारीख़ बनाने वाला अवसर है। मैं इस चीज़ का सब के सामने इज़हार करता हूँ कि शुरू में मेरी कुछ शंकाएं थी। लेकिन जब मुझे मालूम हुआ कि आप का माटो "मुहब्बत सब के लिए और नफ़रत किसी से नहीं" है तो मैंने अपनी राय बदल दी। विशेष रूप से ऐसे माहौल में जहां नस्ल परस्ती, भेदभाव वाला व्यवहार और तशद्दुद हो, वहां मुहब्बत और प्यार की बात करना का प्रशंसनीय है। एक ऐसे माहौल में जहां सिर्फ अपने अधिकार पर ही ज़ोर दिया जाता है और फ़र्ज़ों को नहीं देखा जाता

अब मुझे यक़ीन है कि आपकी जमाअत नफ़रत के ख़िलाफ़ है और प्यार को बढ़ावा देना चाहती है। मेरी इच्छा है कि आपकी जमाअत इस सिलसिला में और अधिक काम करे ताकि हम आने वाली नस्लों को आशावादी कर सकें।

उसके बाद Bas-Rhin काऊंटी कौंसल के नायब सदर और Kuttolsheim के मेयर Etienne Burger भी इस प्रोग्राम में शरीक थे उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा हमारे क्षेत्र में हर धर्म की अपनी महत्त्वपूर्ण है। हमारा समाज प्रत्येक के लिए खुला है। और हम प्रत्येक धर्म के मानने वाले को इज़्ज़त की निगाह से देखते हैं। बहुत ख़ुशी की बात है कि अहमदियों की मस्जिद भी हमारे क्षेत्र में है। जमाअत अहमदिया हमारे क्षेत्र में नई है और हर चुने हुए ओहदेदार को चाहिए

कि इस जमाअत के बारे में और अधिक जाने। यह बहुत ज़रूरी है क्योंकि अहमदी मुसलमान उग्रवादी मुसलमानों की तरह नहीं हैं। हमारा इस आयोजन में शामिल होना हमारी दोस्ती का इज़हार है। हम धर्मों के मध्य बातचीत पर यक़ीन रखते हैं। इस से हम फ़िर्का, नस्ल परस्ती और उग्रवाद के ख़िलाफ़ लड़ सकते हैं। मैं आपको मस्जिद के उद्घाटन पर मुबारकबाद प्रस्तुत करता हूँ।

इस के बाद Hurtigheim से मैंबर आफ़ पार्लीमैंट Martin Wonner ने अपना सम्बोधन प्रस्तुत करते हुए कहा: आजकल के हालात में मस्जिद का उद्घाटन करना कोई आम बात नहीं है। इस से उम्मीद पैदा होती है। मेरा इस आयोजन में शामिल होना बहुत ज़रूरी था। अफ़सोस है कि कई लोग अपनी अज्ञानता की वजह से दूसरों से डरते हैं। वे समाज की तब्दीलियों को मानने के लिए तैय्यार नहीं हैं। कई लोग दूसरे की बात सुनने के लिए तैय्यार नहीं हैं। हम क्या कर सकते हैं? हम उन लोगों को क्या जवाब दे सकते हैं जो नफ़रत सबसे आगे रखते हैं और किसी से मुहब्बत नहीं करते? एक मस्जिद का उद्घाटन करना हमारी तरफ़ से उन के लिए जवाब है। हमारी तरफ़ से उन्हें यही जवाब है कि "मुहब्बत सब के लिए और नफ़रत किसी से नहीं।"

मैं यहां क़ुरआन की एक आयत प्रस्तुत हूँ: एक शख़्स का क़त्ल करना पूरी इन्सानियत का क़त्ल करना है। यह आयत हमें उम्मीद देती है। इस्लाम एक पर अमन धर्म है। इस्लाम प्यार का धर्म है। इस्लाम सहयोग और दया का धर्म है। मैं चाहती हूँ कि इस मस्जिद से भाईचारा फैले। मैं चाहती हूँ कि इस मस्जिद से सब लोगों को प्यार के नज़्ज़ारे देखने को मिलें। मैं चाहती हूँ कि इस का मीनार नफ़रत फैलाने वालों को जवाब दे।

ख़िताब हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़

उसके बाद4 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने अपना ख़िताब फ़रमाया। तशह्हुद,ताव्वुज़ और तसमिया के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया

समस्त सम्मान्नीय मेहमान अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह व बरकातहो। अल्लाह तआला आपको सलामती से रखे और अपनी हिफ़्ज़ तथा अमान में रखे। पहले तो मैं यहां आने वाले सब मेहमानों का शुक्रिया अदा करता हूँ जो आज जमाअत अहमदिया मुस्लिमा के इस धार्मिक फंक्शन में शामिल होने के लिए तशरीफ़ लाए जो हमारी मस्जिद का उद्घाटन है और जैसा कि बहुत से बोलने वाले सम्मान्नीय मेहमान स्पीकर थे जिन्होंने अपने विचारों का इज़हार किया। कई से यही लगता था कि शुरू में इन सबकी बड़ी reservations थीं कि मुसलमानों का यहां आना शायद समस्याओं का कारण बने लेकिन धीरे-धीरे सब ठीक हो गया।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया मस्जिद के बारे में एक बात सबको याद रखनी चाहिए कि ग़ैरमुस्लिम दुनिया में एक बड़ा ग़लत कल्पना स्थापित है कि मस्जिद शायद फ़ित्ना तथा फ़साद का स्थान है जबकि ऐसा नहीं है और कई सम्मान्नीय मेहमानों ने भी इस का इज़हार किया कि मस्जिद तो एक इबादत-गाह है, मस्जिद एक ऐसा स्थान है जहां मुसलमान इकट्ठे हो कर एक ख़ुदा की इबादत करें और हर धर्म में उन के लिए एक इबादत-गाह निर्धारित की गई है। इसी लिए जब मक्का में आँहज़रत सल्ल्लाहो अलैहि वसल्लम के दावा के बाद मक्का के कुफ़्फ़ार ने आप पर सख़्तियां शुरू कीं, आप के मानने वालों पर सख़्तियां शुरू कीं और तेरह साल तक ऐसे ज़ालिमाना सुलूक किए कि जिन्हें देख के रौंगटे खड़े होजाते हैं। कई लोगों को गर्म पत्थरों पर लुटाया गया, कई लोगों को कोयलों पर लिटाया गया, कई लोगों को गर्म रेत पर घसीटा गया, कई लोगों को, औरतों और मर्दों को भाले मार के शहीद किया गया और इसके बाद जब आँहज़रत सल्ल्लाहो अलैहि वसल्लम और मक्का के मुसलमान मदीना में हिजरत करके गए और वहां अमन की तलाश की और वहां के स्थानीय लोगों से यहूदियों और दूसरे लोगों से अमन से रहने का मुआहिदा किया तो वहां भी मक्का के कुफ़्फ़ार ने हमला कर के उनके अमन को बर्बाद करने की कोशिश की। इस वक़्त अल्लाह तआला ने पहली बार मुसलमानों को जंग का हुक्म दिया। अर्थात कि ऐसे लोगों से जंग का हुक्म दिया जो हमला कर रहे हैं और इस में बड़ा स्पष्ट किया, क़ुरआन करीम में इस का ज़िक्र है कि अगर उन लोगों के हाथों को अब न रोका गया तो फिर यह लोग सिर्फ इस्लाम के दुश्मन नहीं बल्कि यह धर्म के दुश्मन हैं। फिर क़ुरआन करीम में यह बड़ा स्पष्ट लिखा है कि अगर उन लोगों को न रोका गया तो ना कोई Synagogue रहेगा, न कोई चर्च रहेगा, न कोई temple रहेगा, न मस्जिद रहेगी। मानो कि इस एक हुक्म में जहां काफ़िरों से जंग का हुक्म दिया ,धर्म की हिफ़ाज़त का हुक्म दिया और समस्त मज़हबों का नाम लेकर हुक्म दिया, समस्त धर्मों की इबादत-गाहों का नाम लेकर हुक्म दिया कि उनके हाथ को रोकने के लिए ज़रूरी है कि अब उनका जवाब दिया जाए। उनके हमलों को रोकने के लिए ज़रूरी है उनका जवाब दिया जाए ताकि हर धर्म आज़ादी से अपनी इबादत-गाह में जा सके। यहूदी synagogue मैं जा सकें और इबादत कर सकें, ईसाई चर्च में जा सकें और इबादत कर सकें, हिन्दू या जो दूसरे हैं वे अपने temples मैं जा सकें और मुसलमान मस्जिद में जा सकें। तो यह वह पहला हुक्म है जो काफ़िरों से जंग का मुसलमानों को मिला और इस वज़ाहत के साथ मिला कि तुमने अब सारे धर्मों की हिफ़ाज़त करनी है। इसलिए क़ुरआन करीम की शिक्षा के अनुसार तो यह बड़ा स्पष्ट है कि इस्लाम किसी भी धर्म के ख़िलाफ़ किसी भी किस्म की कार्रवाई करने का हुक्म नहीं देता। इसलिए कई जंगें जब मुसलमानों पर ज़बरदस्ती ठोंसी गईं, उनसे जंगें की गईं तो वहां भी आँहज़रत सल्ल्लाहो अलैहि वसल्लम और आप के जो चार वास्तविक ख़लिफ़ा थे वे फ़ौजों को यही हुक्म देते थे कि किसी चर्च को नहीं गिराना, किसी इबादत ख़ाने को नहीं गिराना, किसी औरत को नहीं नुक़्सान पहुंचाना, किसी बच्चे को नहीं नुक़्सान पहुंचाना। बल्कि चर्च के जो पादरी हैं और दूसरे राहिब हैं उनको किसी को कुछ नहीं कहना और किसी भी किस्म के किसी दरख़्त को नहीं काटना, किसी फ़सल को नुक़्सान नहीं पहुंचाना। तो यह थे उस वक़्त के हुक्म और जिस पर उस वक़्त मुसलमानों ने अनुकरण भी किया। बाद में अगर हालात बिगड़े और मुसलमान अपनी शिक्षा को भूल गए तो इस शिक्षा का क़सूर नहीं, यह मुसलमानों के अनुकरण का क़सूर है। इसीलिए एक पश्चिम के लिखने वाले ने एक किताब में इस बात को बड़ा स्पष्ट किया है। अमरीका का author है कि आँहज़रत सल्ल्लाहो अलैहि वसल्लम के ज़माना में जंगों में जितने लोग मारे गए उनकी संख्या तो कुछ सौ में होगी या हज़ार में होगी लेकिन जो हम ने दो जंगें लड़ीं, प्रथम विश्व युद्ध और द्वित्तीय विश्वयुद्ध ,उनमें और खासतौर पर द्वित्तीय विश्वयुद्ध में एक ही बम से लाखों लोग मारे गए तो इसलिए यह इल्ज़ाम सिर्फ मुसलमानों को न दो बल्कि यह बाद की जंगें जो लड़ी गईं यह मुसलमानों ने अपने धर्म के फैलाने के लिए नहीं कीं बल्कि उस वक़्त दुनियावी लालच आ गए और वे दुनियावी जंगें थीं जिसको पोलीटिक्ल जंग कहते हैं। अपने उद्देश्य के लिए जंगें थीं। तो पहले ही बता दूं कि इस्लाम की जो जंगों के बारे में ग़लत दृष्टिकोण है इस की बुनियाद ग़लत है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया इस्लाम हरगिज़ शिद्दत पसंद धर्म नहीं और इस्लाम हर धर्म के मानने वाले को इस का हक़ देता है। इस्लाम में पड़ोसी के अधिकार हैं। यहां रहने वाले कई लोगों को शायद विचार हो कि अभी यहां मस्जिद बनी है, यहां मुसलमान आएँगे, इबादत करेंगे और कई मुसलमानों के ऐसे कर्म हैं कि हमें भी ख़तरा हो सकता है लेकिन इस्लाम की जो शिक्षा है वह यह कहती है कि अपने पड़ोसी का इस हद तक विचार रखो कि जिस तरह तुम अपने किसी क़रीबी अज़ीज़ का रख़ते हो और फिर क़ुरआन करीम में जो पड़ोसी की परिभाषा की गई है वह यह है कि तुम्हारे साथ घरों में रहने वाले, तुम्हारे साथ सफ़र करने वाले, तुम्हारे साथ काम करने वाले, इस इलाक़े में रहने वाले और फिर इस की व्याख्या इस्लाम धर्म के संस्थापक हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने कि 40 घर तक तुम्हारे पड़ोसी हैं। अगर इस तरह देखा जाए तो मुसलमान जहां भी रहते हैं, अहमदी मुसलमान खासतौर पर जहां भी रहते हैं उनके इर्द-गिर्द के 40 घरों के पड़ोसी, इस मस्जिद के इर्दगिर्द के लोग सब पड़ोसी हैं और पड़ोसी का हक़ यह है कि आँहज़रत सल्ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि मुझे इस शिद्दत से पड़ोसी के हक़ के बारे में कहा गया कि मुझे विचार पैदा हुआ कि शायद अब विरासत में भी पड़ोसी को हक़ दिया जाएगा। तो यह है बुनियादी शिक्षा और यह हैं पड़ोसी के अधिकार।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया दुनिया में हम मस्जिदें बनाते हैं। यहां फ्रांस में तो यह दूसरी मस्जिद बनी है और इस लिहाज़ से और यहां जमाअत भी बहुत थोड़ी है, जमाअत का परिचय नहीं है। यूरोप के कई देशों में, जर्मनी में, इंग्लिस्तान में, या अमरीका में ,कैनेडा में मस्जिदें बनाते हैं और वहां के लोगों को परिचय है क्योंकि जमाअत भी बड़ी है कि अहमदी मुसलमान जब मस्जिद बनाते हैं तो वहां से सिर्फ अमन और प्यार और मुहब्बत का नारा ऊंचा करते हैं। मस्जिद किसी किस्म के उग्रवादी काम करने के लिए मन्सूबा बनाने के लिए नहीं बनाई जाती। मस्जिद बनाई है तो इस लिए कि एक ख़ुदा की इबादत की जाए और यहां आने वाले फिर प्यार और मुहब्बत और सुलह और सफाई से आपस में भी रहें और यहां के इर्द-गिर्द के जो लोग हैं उनके साथ भी यही करें।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अफ्रीक़ा में अल्लाह तआला के फ़ज़ल से हमारी बड़ी संख्या है। वहां जमाअत की मस्जिदें भी बनाते हैं लेकिन साथ ही जमाअत वहां इन्सानी भलाई के काम भी कर रही है।स्कूल भी खोलती है। हस्पताल भी खोलती है और दूसरी सुविधाएं जो हैं, पानी की facilitiesहैं, नलके हैं, हैंडपंप हैं वे भी लगा रहे हैं। अफ्रीक़ा में जमाअत के बहुत सारे प्रोजेक्ट चल रहे हैं जो इन्सानियत की सेवा के लिए हैं। हमारे सैंकड़ों स्कूल हैं, सैंकड़ों हस्पताल हैं और विभिन्न प्रोग्राम हैं जैसे पानी के प्राजैक्ट हैं। यहां के रहने वाले लोगों की कल्पना ही नहीं। यहां अगर एक छोटा सा गांव भी है, यह सारा देहाती क्षेत्र है,गांव है लेकिन यहां आपके पास बिजली भी है, सड़क भी जा रही है, पानी की सुविधा भी है और समस्त वो सुविधाएं लगभग उपलब्ध हैं जो शहरों में हैं लेकिन अफ्रीक़ा के गांव में जब जाएं तो वहां न सड़क होगी न वहां बिजली होगी न वहां पानी की सुविधा होगी और पानी की हालत यह है कि दो दो मील दूर गांव से कई बार गंदे तालाब हैं जिनमें जानवर भी पानी पीते हैं और इस में बैठते हैं वहीं से इन्सान भी पानी लेते हैं और बच्चे कई बार अपने सिरों पर टोकरियां रखकर, बालटियां रखकर, बर्तन रखकर दो दो किलो मीटर ,तीन तीन किलोमीटर का सफ़र एक पानी की बाल्टी लाने के लिए करते हैं और इस वजह से वे शिक्षा से भी वंचित हैं। वहां जमाअत अहमिदया जहां उनकी शिक्षा के लिए स्कूल खोलती है, प्राइमरी स्कूल उपलब्ध किए हैं। सैकण्डरी स्कूल उपलब्ध किए हैं और कई रीमोट इलाक़े में क्लीनिक और हस्पताल भी खोले हैं वहां साफ़ पानी पीने के लिए हैंडपंप भी लगाए और सोलर अनर्जी से ट्यूबवेल भी लगाए जिससे साफ़ पानी आता है और जब हम तस्वीरें देखते हैं, उन लोगों की हालत देखते हैं जिनको उनके गांव में नलके से साफ़ पानी मिल जाता है तो उस वक़्त इस ख़ुशी का जो इज़हार हो रहा होता है वे ऐसा ही है जैसे यूरोप में रहने वाले किसी शख़्स की बहुत बड़ी लाटरी निकल जाए तो इस को ख़ुशी का इज़हार होता है। तो ऐसे लोगों को जब साफ़ पानी उपलब्ध आता है तो जैसा कि मैंने कहा उनकी ख़ुशी देखने वाली होती है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अत: जमाअत अहमदिया मुस्लिमा जहां भी जाती है अमन के पैग़ाम के साथ जाती है। अगर हम नारा लगाते हैं। कई सम्मान्नीय मेहमानों ने अपने ख़िताब में इस का ज़िक्र भी किया- ,Love for all Hatred for none का नारा है। अगर हम नारा लगाते हैं तो इस का इज़हार भी करते हैं और उसके इज़हार के लिए फिर यही तरीक़ा है कि लेगों की सेवा की जाए। इसलिए पहली बात तो यह कि यहां के रहने वाले जो इर्दगिर्द के गांव हैं उनको में बता दूं यहां क़ानून की पाबन्दी का भी ज़िक्र किया गया कि जमाअत अहमदिया मुस्लिमा क़ानून की हर लिहाज़ से पाबन्दी करने वाली है और हमेशा जहां मस्जिदें बनाई जाती हैं खासतौर पर छोटी स्थानों पर, यहां सड़क भी छोटी है, लोगों को आने जाने में तकलीफ़ भी हो सकती है। हमें ट्रैफ़िक की वजह से यही कहा जाता है कि ट्रैफ़िक के क़ानून की पाबन्दी करें, देश के क़ानून की पाबन्दी करें और जिस हद तक कौंसल ने हमें आज्ञा दी है इस हद तक इस स्थान को प्रयोग करें और मुझे उम्मीद है कि इस मस्जिद को बने कुछ समय हो चुका है,formal उद्घाटन उस का आज हो रहा है इस के बाद से अहमदी यहां शायद अधिक संख्या में भी आना शुरू हूँ लेकिन वही लोग आएँगे जो क़ानून के पाबन्द होंगे, वही लोग आएँगे जो क़ानून की पाबन्दी के साथ अपने इस घर में आ कर जो ख़ुदा तआला का घर है इबादत करेंगे और जहां वे अपने ख़ुदा की इबादत कर के इस का हक़ अदा करेंगे वहां उनके दिल में यह भी एहसास पैदा होगा कि वही ख़ुदा जो यह कहता है कि मेरी इबादत करो वही ख़ुदा हमें क़ुरआन करीम में यह भी कहता है कि इन्सानियत की सेवा करो। बल्कि क़ुरआन करीम में यहां तक लिखा है कि वे नमाज़ी जो लोगों का हक़ अदा नहीं करते, जो इन्सानियत की सेवा नहीं करते, जो यतीमों को खाना नहीं खिलाते, जो मिस्कीनों का ध्यान नहीं रखते, ग़रीबों का ध्यान नहीं रखते, जो ज़ुलम कर रहे हैं उनकी नमाज़ें उनके लिए हलाकत का कारण हैं। वे नमाज़ें कोई फ़ायदा नहीं देंगी बल्कि वे नमाज़ें अल्लाह तआला उन पर उल्टा देगा जो उनको बजाय कोई फ़ायदा देने के, कोई बदला देने के उन के लिए हलाकत का और उनकी तबाही का कारण बनेंगी। अत: एक शख़्स जो मस्जिद को आबाद करने वाला हो उस के जब यह दृष्टिकोणत हों और जिसको अल्लाह तआला का वास्तविक भय हो तो फिर यह हो ही नहीं सकता कि वह लोगों के अधिकार मारने वाला हो और वह लोगों के हक़ अदा न करे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अत: जमाअत अहमदिया मुस्लिमा जहां जाती है इसी पैग़ाम के साथ जाती है और इसी सोच के साथ जाती है कि जहां हमने अपने अल्लाह के अधिकार अदा करने हैं वहां उस की मख़लूक़ के भी हक़ अदा करने हैं और मुझे उम्मीद है कि इन्शा अल्लाह तआला जैसा कि मैंने पहले भी कहा कि अहमदी इसी सोच के साथ इस मस्जिद को आबाद रखेंगे और यहां के पड़ोसियों से पहले से बढ़कर और बेहतर सम्बन्ध बनाएंगे और उनका हक़ अदा करने की कोशिश करेंगे और यह मस्जिद यहां किसी किस्म के पड़ोसियों में किसी किस्म की तकलीफ़ का कारण नहीं बनेगी बल्कि आप हमेशा यही देखेंगे कि जो यहां आने वाले हैं वे आप लोगों को सुविधा पहुंचाने वाले और आराम पहुंचाने वाले हैं और यही निकट integration है जो बाहर से आने वालों की नए आने वाले देश में करनी चाहिए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया फ्रांस की हुकूमत और पश्चिमी हुकूमतों की जिन्होंने यहां से बाहर से आने वाले अहमदियों को स्थान दिया, असाइलम दिया उनकी यह बड़ी मेहरबानी है और इस का तक़ाज़ा यही है कि हम उनके शुक्रगुज़ार हूँ। यहां इस वक़्त जमाअत अहमदिया की अक्सरीयत बाहर से आने वालों की है। फ्रांस के स्थानीय लोग तो शायद एक दो ही हों और यह वे लोग हैं जो कई मुश्किलों की वजह से अपने देशों को छोड़कर यहां आए हैं, यह वे लोग हैं जिनको अपने देशों में इबादत का हक़ नहीं दिया गया ,जिनको इबादत करने से रोका गया, जिनको अपनी इच्छा से अपने धर्म पर स्थापित रहने से, धर्म की शिक्षा पर अनुकरण करने की आज्ञा नहीं दी गई और आख़िर मजबूर होकर यहां आए। अत: जब वे यहां आए और फ्रांस की हुकूमत ने उनको आज्ञा दे दी और वे यहां आबाद भी हो गए तो अब इन अहमदियों का भी यह फ़र्ज़ है कि इस देश की सेवा करके उस का सही हक़ अदा करें और यही शुक्रगुज़ारी है और यही वह चीज़ है जो अल्लाह तआला एक वास्तविक मुसलमान से चाहता है कि वे शुक्रगुज़ार हो। अगर इस में शुक्रगुज़ारी नहीं, बल्कि आँहज़रत सल्ल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तो यहां तक फ़रमाया कि जो शख़्स इन्सानों का शुक्र अदा नहीं करता वह ख़ुदा तआला का भी शुक्र अदा नहीं करता। अत: इस शुक्रगुज़ारी का तक़ाज़ा भी यही है कि हम इस देश में रह के यहां के क़ानून की पाबन्दी करें, यहां के लोगों की सेवा की तरफ़ तवज्जा दें और जिस हद तक हो सकता है इस देश की बेहतरी के लिए काम करें और मुझे उम्मीद है कि इंशा अल्लाह तआला हमारे अहमदी इसी सोच के साथ यहां रहेंगे और इसी सोच के साथ काम करेंगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया अगर आप में से किसी के ज़हन में कोई फ़िक्र है, कोई reservation है, कोई शंका है कि शायद अहमदी मुसलमान यहां आकर, इस मस्जिद को बना कर किसी किस्म के फ़ित्ने का कारण न बनें तो यक़ीन रखें कि इन्शा अल्लाह तआला हम फ़ित्ने का कारण नहीं बनेंगे बल्कि आप लोगों की सेवा करने वाले और इस देश के क़ानून की पाबन्दी करने वाले होंगे और इन्शा अल्लाह वही वास्तविक इस्लामी शिक्षा यहां फैलाने वाले होंगे, अपने अनुकरण से दिखाने वाले होंगे जो हमें हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सिखाई और जो क़ुरआन करीम ने दी। शुक्रिया। जज़ाकल्लाह

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ का यह ख़िताब 4 बजकर 25 मिनट तक जारी रहा। आख़िर पर हुज़ूर अनवर ने दुआ करवाई। इस के बाद मेहमानों की सेवा में रीफ़रेशमंट पेश की गई। मेहमान बारी बारी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ से मिलने के लिए आते रहे। हुज़ूर अनवर से हाथ मिलाने के सौभाग्य प्राप्त करते, हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर बनवाते। हुज़ूर अनवर दया करते हुए मेहमानों के साथ गुफ़्तगु फ़रमाते। इस प्रोग्राम के बाद 5 बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

12 अक्तूबर 2019 ई (दिनांक हफ़्ता)

हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।

तालिबे दुआ

Sohail Ahmad Nasir and Family

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

फ़ैमिली मुलाक़ातें

प्रोग्राम के अनुसार 6 बजकर 40 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपने दफ़्तर तशरीफ़ लाए और फ़ैमिलीज़ मुलाक़ातें शुरू हुईं। आज शाम के इस सैशन में 30 फ़ैमिलीज़ के 123 लोगों और 4 ने व्यक्तिगत रूप से अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात का सौभाग्य पाया। आज मुलाक़ात करने वाली ये लोग Lille Seine et Marne, Lyon,Besancon,Epernay,Saint Denis,Metz,Paris की जमाअतों से आई थीं। उनमें से कई बड़े लंबे फ़ासले तय कर के पहुंची थीं

Epernay से आने वाली फ़ैमिली 355 किलो मीटर, पैरिस से आने वाले 490 किलो मीटर,Lyon से आने वाले 495 किलो मीटर और Lille की जमाअत से आने वाली फ़ैमिलीज़ 525 किलो मीटर की दूरी तयकर के अपने प्यारे आक़ा से मुलाक़ात के लिए पहुंची थीं।

इन सभी ने अपने प्यारे आक़ा के साथ तस्वीरें बनवाने की सौभाग्य पाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्र तथा छात्राओं को क़लम प्रदान फरमाए और दया करते हुए छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान फरमाताएं

मुलाक़ातों का यह प्रोग्राम 8 बजकर 5 मिनट पर ख़त्म हुआ। इस के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ ने "मस्जिद महदी' मैं तशरीफ़ ला कर नमाज़ मग़रिब इशा जमा कर के पढ़ाई। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज़ अपनी रिहायश गाह पर तशरीफ़ ले गए।

आयोजन में शामिल मेहमानों के विचार

आज के आयोजन में अल्लाह तआला के फ़ज़ल से बड़ी संख्या में मेहमान आए। जिस हाल में आयोजन था वह भर चुका था। लगभग एक सौ से अधिक मेहमानों के लिए मार्की मैं प्रबन्ध किया गया और उन्होंने MTA के द्वारा यह सारा प्रोग्राम देखा। मेहमान हुज़ूर अनवर के ख़िताब से बहुत प्रभावित हुए बहुतों ने अपने विचारों का इज़हार किया। कई मेहमानों के विचार प्रस्तुत हैं।

इस क्षेत्र के 33 देहात की एक तंज़ीम की सदर Justin de Jeune भी इस प्रोग्राम में शामिल थी। यह अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहती है कि :हम यहां सिर्फ इसलिए आए हैं कि आप लोग दुनिया से नफ़रत ख़त्म करने के लिए काम कर रहे हैं और इस के मुक़ाबला पर प्यार मुहब्बत और बर्दाश्त के व्यवहारों को बढ़ावा दे रहे हैं। मेरे विचार में दुनिया का बेहतरीन भावना मुहब्बत है। यही भावना है जो हम सबको मुत्तहिद करता है। इस से बेहतर क्या चीज़ हो सकती है कि किसी की मदद की जाए, कोई गिर जाए तो हाथ बढ़ा कर उसे उठाया जाए। मैं फ़साद के ख़िलाफ़ आप लोगों की कोशिशों को सराहती हूँ और प्यार तथा मुहब्बत फैलाने के लिए आपकी शुक्रगुज़ार हूँ। इसी उद्देश्य के लिए हम यहां आए हैं।

ख़लीफ़ा की तक़रीर बहुत उत्तम थी। इस तक़रीर से मुझे फिर यक़ीन प्राप्त हुआ है कि आप लोग समाज की बेहतरी के लिए कोशिश कर रहे हैं। आप लोग एक दूसरे से सहयोग के साथ रहते हैं और अमन की स्थापना के लिए हर अवसर से फ़ायदा उठाते हैं। ख़लीफ़ा ने यही बात की है, अमन की बात की है और आने वाली नस्लों को जीने की उम्मीद दिलाई है। आपने बर्दाश्त और मुहब्बत की बात की है और यह हमारे लिए बहुत ही हौसला बढ़ाने वाली बात है

कौंसल आफ़ Barin में एक विभाग के उप सदर भी इस आयोजन में शामिल थे। यह कहते हैं हमारे क्षेत्र में तिब्बत से सम्बन्ध रखने वाले बुद्ध मत का यूरोपीयन सैंटर है। मैं धर्मों के बारे में जानता हूँ, ईसाईयत, यहूदियत, जोड़ियो क्रिस्चियन, बुद्ध मत इत्यादि की ख़िदमात से अच्छी तरह आगाह हूँ। ख़लीफ़ा की तक़रीर बहुत प्रभावित करने वाला थी। एक आपके शब्दों थे और एक आपका दृष्टिकोण था और वह यह था कि "मुहब्बत सब के लिए नफ़रत किसी से नहीं" आपने इस्लाम की भरपूर तस्वीर प्रस्तुत की है। आजकल जैसा कि इस्लाम को समझा जाता है आपने इसके विरुद्ध इस्लाम की वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत की है। आपके शब्दों और आपके दृष्टिकोण में बहुत समानता है। आप प्रत्येक के लिए अपने दरवाज़े खुले रखने पर यक़ीन रखते हैं और आज के आयोजन से मैंने यही सीखा है। यह अमन का रास्ता है।

Martine Wonner मैंबर आफ़ फ्रैंच पार्लीमैंट ने आयोजन के बाद अपने भावनाओं का इज़हार करते हुए कहा कि मेरा यहां आना बहुत ज़रूरी था। मैं बहुत ख़ुश हूँ कि आपने एक भरपूर पैग़ाम दिया है। एक अमन का पैग़ाम, भाई चारा का पैग़ाम दिया है और यह पैग़ाम समस्त दुनिया के लिए है। मुझे इलम है कि आपकी जमाअत पर बहुत से देशों में अत्याचार हो रहे हैं लेकिन यह अत्याचार भी आप लोगों का रास्ता नहीं रोक पाए। अहमदी बहुत सक्रिय हैं, यह कुछ कर दिखाना चाहते हैं और उनके कर्मों से उनका माटो झलक रहा है। मैं ने इस मस्जिद के बारे में ख़लीफ़ा से भी बात की है। मैं फिर बाद में भी आऊँगी जब कि यहां कम लोग होंगे और आप लोगों से बैठ कर तसल्ली से बात करने का अवसर मिलेगा और फिर आपकी आदतें बेहतर तौर पर जान सकूँगी। यह हमारे समाज के लिए,उसकी बेहतरी के लिए बहुत है।

ख़लीफ़ा ने अमन की बात की है, बर्दाश्त की बात की है। फ्रांस के लिए, फ्रांस के शहरियों के लिए यह पैग़ाम बहुत अहम है। फ्रैंच लोगों को यह जानने की ज़रूरत है कि जो इस्लाम हम मीडिया से जानते हैं वह विभिन्न है। हमें इस असल और वास्तविक इस्लाम को जानने की ज़रूरत है। मेरे विचार में ख़लीफ़ा की तक़रीर को तो समस्त दुनिया में बड़े पैमाने पर ब्रॉडकास्ट करना चाहिए।

महोदया ने और अधिक कहा:जिस तरह से लोग इस्लाम से दूर होते जा रहे हैं तो इस का हल तो यही नज़र आता है कि इस क्षेत्र में मस्जिद बनाई जाए ताकि लोग वास्तविक इस्लाम और उसके अमन के पैग़ाम से परिचित हूँ। इस्लाम तो यक़ीनन एक अमन का धर्म है क्योंकि क़ुरआन करीम में लिखा है कि अगर एक इन्सान दूसरे को क़तल करता है तो यह ऐसा ही है कि मानो उसने सारी इन्सानियत को क़तल कर दिया है। तो अब किस तरह हो सकता है कि इस शिक्षा के बावजूद इस्लाम अमन का धर्म न हो। मैं इस क्षेत्र को बहुत ख़ुश-क़िस्मत समझती हूँ और हुज़ूर को स्वागत कहती हूँ आर Hurtigheim मैं तशरीफ़ लाए

Strasbourg की मस्जिद के उद्घाटन पर Eubajia साहिब और Burgeais साहिबा ने अपने विचारों का इस तरह इज़हार किया है कि हमने आज के आयोजन के लिए दावत स्वीकार करने से पहले इंटरनैट पर आपकी जमाअत के बारे में मालूमात प्राप्त कीं। जमाअत अहमदिया की कोशिशों के बारे में जान कर हमने दिल्ली ख़ुशी से दावत स्वीकार की और सबसे अधिक हमें इस बात की ख़ुशी हुई है कि यहां सब धर्मों के मध्य बराबरी को बढ़ावा दिया गया। ख़लीफ़ा का ख़िताब बहुत प्रभावित करने वाला था। आपने हुकूक़ इंसानियत और विशेष रूप से पड़ोसियों के अधिकार पर इस्लामी शिक्षा प्रस्तुत की।

एक शख़्स ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा :मैं एक क़रीबी गांव से आया हूँ। मैं आप लोगों के बारे में जानना चाहता था, आप लोगों से सुनना चाहता था और आप लोगों से ख़ुद मिलना चाहता था। मेरा विचार है कि बतौर पड़ोसी हमें एक दूसरे को जानना चाहिए। ख़लीफ़ा की तक़रीर हैरान करने वाली थी। असल में मुझे आप लोगों के बारे में कुछ इलम नहीं है, मैं आपकी जमाअत , उस के उद्देश्य इत्यादि से अज्ञान हूँ। आपकी तक़रीर बहुत ही प्रभावित करने वाली थी। इस में भाई चारा का पैग़ाम था। आपने वह पैग़ाम दिया जो हम सबकी फ़ितरत पहले ही तक़ाज़ा

दुआ का अभिलाषी
जी.एम. मुहम्मद शरीफ़
जमाअत अहमदिया मरकरा (कर्नाटक)

इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 5 Thursday 23 July 2020 Issue No.30

MANAGER :
NAWAB AHMAD
Mobile : +91-94170-20616
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 500/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

करती है और उन शंकाओं को दूर किया है जो समाज में हैं।

एक साहिब ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा कि मुझे इस आयोजन में शामिल हो कर बहुत ख़ुशी हुई है। नए सम्पर्क बने हैं। यह इमारत बहुत उत्तम है और प्रभावित करने वाली है। मैं प्रोटैस्टैंट हूँ और आज़ादी राय पर यक़ीन रखता हूँ। मेरे विचार में धर्मों के मध्य वार्तालाप बहुत ज़रूरी है, एक दूसरे से मिलना और बात करना बहुत ज़रूरी है।

एक औरत Harriette और इस के पति Charles भी इस आयोजन में शामिल थे। उन्होंने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा: मुझे और मेरे पति को यहां आ कर बहुत ख़ुशी हुई है। ख़लीफ़ा की तक़रीर बहुत प्रमुख थी। यह एक बहुत महान पैग़ाम था ,जो कि हमारे विचार में समस्त दुनिया में जाना चाहिए। इसी पैग़ाम की दुनिया को ज़रूरत है।

एक हिंदू औरत भी इस प्रोग्राम में शामिल थी। यह कहती है:मैं कम्पयूटर प्रोग्रामर हूँ और मुझे एक अहमदी औरत ने यहां आने की दावत दी। मेरा सम्बन्ध हिन्दू एसोसीएशन से है। यहां आकर बहुत ख़ुशी हुई। बहुत ही अच्छा माहौल था और बहुत प्यारा पैग़ाम दिया गया है। मुहब्बत और बर्दाश्त का पैग़ाम बहुत अहम है। ख़लीफ़ा की तक़रीर में यह पैग़ाम बहुत अहम था। आपकी तक़रीर से एक और बात जिसने मुझे बहुत प्रभावित किया है वो यह है कि आप इन्सानियत की सेवा पर यक़ीन रखते हैं और इसी जज़बा को फैलाना चाहते हैं।

एक साहिब Danial West ने अपने भावनाओं का इज़हार करते हुए कहा- :मेरा सम्बन्ध फ्रांस में आने वाले मुहाजिरीन की रहनुमाई करने वाली एक संस्था से है। मैं यहां आकर बहुत ख़ुश हूँ और मेरे लिए बहुत सम्मान की बात है। हम भी यही कोशिश कर रहे हैं जो कि आपका पैग़ाम है। अर्थात अमन, आज़ादी और मुहब्बत का पैग़ाम। आपकी तक़रीर से मुझे जो बात बहुत अच्छी लगी वह यह है कि आप आज़ादी पर यक़ीन रखते हैं, हर धर्म वाले की आज़ादी और हर ऐसे शख़्स की भी आज़ादी पर यक़ीन रखते हैं, जिसका किसी धर्म से सम्बन्ध नहीं है। दुनिया को बिलकुल ऐसा ही होना चाहिए। मैं यहां बार-बार आऊँगा और यहां आकर दुआ भी करूँगा।

एक साहिब ने अपने भावनाओं का इज़हार करते हुए कहा: मैं किसी मस्जिद के उद्घाटन पर पहली बार आया हूँ। यह बहुत ही प्रभावित करने वाला आयोजन था। यहां ऐसी शानदार इमारत देखकर बहुत ख़ुशी हुई है। ख़लीफ़ा ने अपनी तक़रीर में इस्लाम का बड़ी ख़ूबी से रक्षा किया है। आपने बताया है कि इस्लाम अम्न पसन्द धर्म है। आजकल इस्लाम के बारे में बहुत शंकाएं हैं। आपने बड़ी ख़ूबी से असल हक़ीक़त बताई है।

एक साहिब ने कहा: मेरे लिए अपने भावनाएँ वर्णन कर नामुमकिन नहीं है। मुझे इस्लाम की इस संस्था का पहले बिलकुल इलम नहीं था। गली में मुझे कई लोगों मिले ,जिन्होंने इस आयोजन में आने का कहा। मैंने इंटरनैट से कुछ मालूमात लीं और यहां आने का फ़ैसला किया और क्या ही ख़ूब फ़ैसला था। जो आज मैंने यहां सुना है, मैं इस की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकता। इस्लाम की यह शाख़ अम्न पसन्द शाख़ है, यह इस्लाम की असल तस्वीर है। यह ऐसा इस्लाम है जिसमें इन्सानियत है, प्यार है, मुहब्बत है। अब मुझे मालूम हुआ है कि जो इस्लाम हमें बताया जाता है, वह इस्लाम नहीं बल्कि कोई और चीज़ है। मुझे अब मालूम हुआ है कि इस्लाम की अख़लाक़ी शिक्षा ईसाईयत जैसी है। ख़लीफ़ा की बातों से मुझे यक़ीन हो गया है कि यह ग़ैरमामूली है।

एक औरत Nize Babylons कहती हैं कि यह आयोजन बहुत अहम है, इसलिए कि यह हमें मुत्तहिद करता है। ऐसे वक़्त में जब लोगों में नफ़रत पैदा हुई हो, ऐसे में इस किस्म के आयोजन उम्मीद की किरण हैं। लोगों को यह समझना चाहिए कि जो इस्लाम धर्म के बारे में बताया जाता है वह केवल धोखा है। धर्म तो प्यार की शिक्षा देता है, धर्म तो ख़ुदा की बात करता है और ख़ुदा की मुहब्बत पैदा करता है।

एक औरत ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा:मैं एक क़रीबी गांव से आई हूँ। हमें बहुत अच्छे अंदाज़ से इस आयोजन में शामिल होने की दावत दी गई थी। हमें इस से पहले अहमदिया जमाअत का ज्ञान नहीं था। मुझे लगता है कि यह

पृष्ठ 1 का शेष

और उनके नतीजों के उदाहरण तो मौजूद हैं कफ़्फ़ारा का उदाहरण कोई मौजूद नहीं। जैसे भूख लगती है तो खाना खा लेने के बाद वह दूर हो जाती है या प्यास लगती है, पानी से जाती रहती है तो मालूम हुआ कि खाना खाने या पानी पीने का नतीजा भूख का जाते रहना या प्यास का बुझ जाना हुआ। मगर यह तो नहीं होता कि भूख लगे ज़ैद को और बकर रोटी खाए और ज़ैद की भूख जाती रहे। अगर कानून क़ुदरत में इस का कोई उदाहरण मौजूद होता तो शायद कफ़्फ़ारा का मसला मान लेने की गुंजाइश रखता लेकिन जब कानून क़ुदरत में इस का कोई उदाहरण ही नहीं है तो इन्सान जो नज़ीर देख कर मानने का आदी है। उसे क्योंकर स्वीकार कर सकता है। आम कानून इन्सानी में भी तो इस का उदाहरण नहीं मिलती है। कभी नहीं देखा गया कि ज़ैद ने ख़ून किया हो और ख़ालिद को फांसी मिली हो। अत: यह एक ऐसा नियम है जिसकी कोई उदाहरण हरगिज़ मौजूद नहीं।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 162 से 165 प्रकाशन 2008 कादियान)

☆ ☆

एक दूसरे को जानने का एक बहुत बड़ा अवसर है जो आप लोगों ने पैदा किया है। हम सब अमन के साथ मिल-जुल कर किस तरह रह सकते हैं। ख़लीफ़ा की तक़रीर सुनकर पता चला है कि हम किस तरह लोगों की इज़्ज़त कर हैं।

एक शख़्स ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा: मेरा सम्बन्ध एक क़रीबी गांव से है। मुझे अहमदिया जमाअत का बिलकुल भी ज्ञान नहीं था। हम सबको आप लोगों ने बहुत अच्छे तरीक़ा पर स्वागत कहा। ख़लीफ़ा की तक़रीर बहुत उत्तम थी।

एक शख़्स ने कहा:मैं ख़लीफ़ा की तक़रीर सुनकर बहुत प्रभावित हुआ हूँ। आपकी शख़्सियत में हमदर्दी स्पष्ट नज़र आती है। बहुत प्यार करने वाले और विचार रखने वाले महसूस होते हैं। आपका यह पैग़ाम जो कि मुहब्बत और भाईचारा पर आधारित है बहुत ही उत्तम है और यह पैग़ाम बहुत अच्छा है।

एक शख़्स ने कहा: ख़लीफ़ा बहुत सम्मान्नीय शख़्सियत हैं। आप बहुत नेक हैं और आप की तबीयत में ठहराव है। आपने जो पैग़ाम दिया वह भी बहुत उच्च है।

एक औरत ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा :मैं बहुत ख़ुश हूँ कि में इस आयोजन में शामिल हुई और यहां आकर मुझे राहत महसूस हुई है और मुहब्बत मिली है और यही इस आयोजन का असल उद्देश्य था।

Jean Jacques Ruch साहिब जो शहर Hurtigheim के मेयर हैं, ने अपने विचारों का इज़हार करते हुए कहा: मैं मस्जिद आकर बहुत ख़ुश हूँ। मुझे इस बात की भी ख़ुशी है कि खासतौर पर मेरे गांव के बहुत से लोग इधर शामिल हुए हैं। यह सब आपके पिछले 7 सालों के हमारे साथ सम्पर्क और आपके अमन के पैग़ाम का नतीजा है। मेयर ने अमीर साहिब फ्रांस से कहा कि यह बात अपने ख़लीफ़ा को बताओ इस reception मैं इतने अधिक लोगों इसलिए आए हैं कि कुछ दिनों से लोग बार-बार मेरे पास आ रहे थे कि आपने क्या अपने क्षेत्र में मस्जिद बनाई है?

मैं उनको बताता था कि आपकी जमाअत किस तरह की है, इसलिए मैं यह सोच कर उनको इस प्रोग्राम में ले आया ताकि वे ख़ुद अपनी आँखों से देखें कि मैं जो लोगों को जमाअत अहमदिया के बारे मैं कहता हूँ हक़ीक़त है, ग़लत नहीं। आप अपनी आँखों से देख लें। इसी तरह यह भी कहा कि तुम बिना बताए जाओगे तो वे आपके बैठने के लिए अपनी स्थान छोड़ देंगे। फिर यह कहने लगा कि मैं एक धार्मिक आदमी हूँ। मेरा भाई पादरी है। मैं कह सकता हूँ कि आज यहां एक फ़रिश्ता आपके बीच है।

(शेष.....)

☆ ☆
☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad